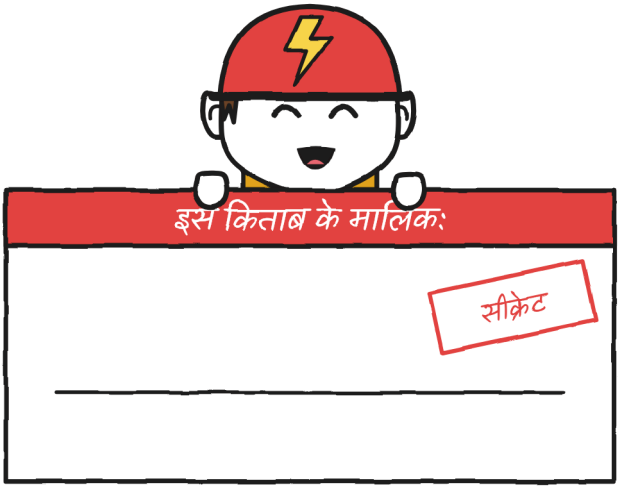

और उसे पहले मैं पढ़ती हूँ। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो लौटा देना। प्लीज़।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: असली पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली साइकिल हो, तो आख़िरी पन्ना देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 3

वापस भेजिए, प्लीज़

LinguAula

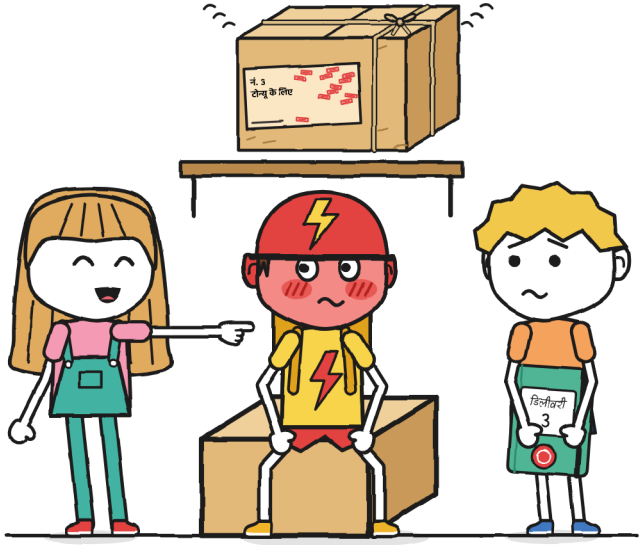

(गुनी की डायरी)

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 3
वापस भेजिए, प्लीज़

सीरीज़ की तीसरी किताब। पिछली दोनों: “यह पार्सल काटता है” और “बादल गरजने से पहले न खोलें”।

लेखन और चित्र: LinguAula

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।

हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी डिलीवरी वाले को चोट नहीं आई। हाँ, एक लाल जूरूर पड़ गया। —ज.

कौन कौन है

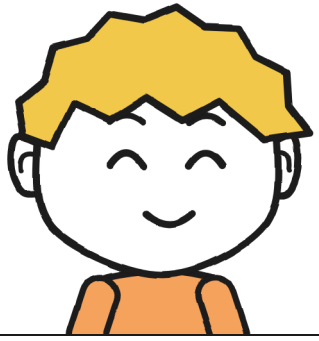

गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। ऐसी चीज़ों के चित्र बनाता है जो किसी ने माँगी नहीं। यह डायरी उसी की है।

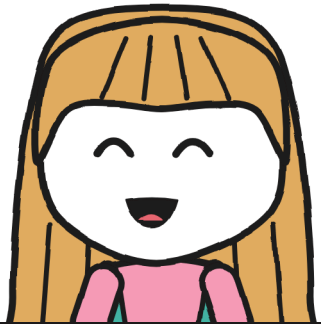

जूलिता। हरे रंग से लिखती है और "ज." से दस्तख़त करती है। उसे हमेशा पता होता है कि मदद कैसे करनी है। यही तो समस्या है।



टोन्यो। साइकिल पर "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है। दस मिनट में या मुफ़्त। हिस्सों में लाल होता है।



मारा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती है। जितना बताती है, उससे ज़्यादा जानती है।

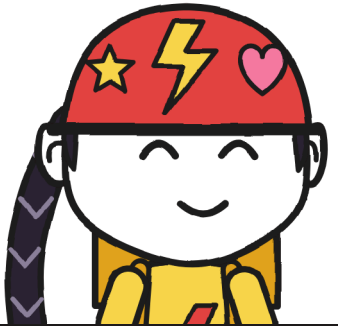

ज़ोई। "बिजली" वाली। सबसे तेज़। सबके निकनेम वही रखती है।

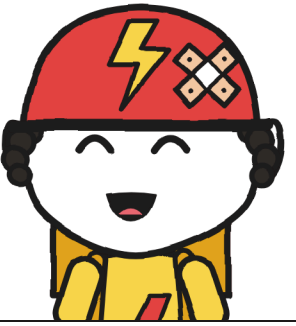

ब्रूनो। "बिजली" वाला। एक बार पंक्चर हुआ था। दो साल पहले।

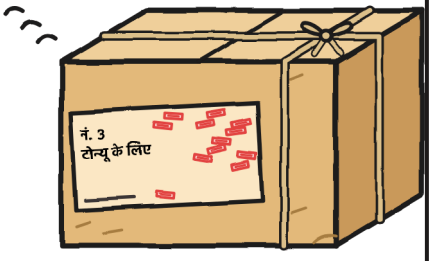

पार्सल नं. 3। हिलाओ तो बजता है। लेबल पर बस एक नाम लिखा है।

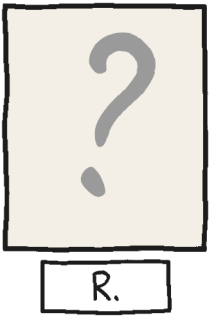

R. की तरफ़ से वे पार्सल भेजे जाते हैं जिन्हें कोई नहीं पहुँचा पाता। कोई उसका नाम नहीं लेता।

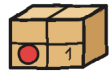

अध्याय 1

टिन-टिन

टिन-टिन।

वह बहुत छोटी-सी आवाज़ थी, उन आवाज़ों में से जो तभी सुनाई देती हैं जब बाक़ी सब चुप हो चुका हो: प्याली से टकराती चम्मच, किसी खिलौना साइकिल की बेल। वह वापस आए पार्सलों की शेल्फ़ से आई थी, और मारा की दुकान में हम जो चार बचे थे, इतने स्थिर हो गए कि मुहर से गिरती चिंगारी भी सुनाई दे जाती।

तूफ़ान को गए काफ़ी देर हो चुकी थी। जूलिता अब भी मेरे नीले स्टूल पर चढ़ी थी, हरा मार्कर ऊपर उठाए, और कटे हुए 19 के बगल में ताज़ा लिखा 18 चमक रहा था। मारा का एक हाथ आधे रास्ते में रुका था, शटर की ओर बढ़ता हुआ। मैं, जिसे अच्छे से अच्छे पलों में भी नहीं पता होता कि हाथों का क्या करूँ, मैंने हाथों से कुछ नहीं किया।

वह नं. 3 था। और टोन्यो, जो "बिजली" के लिए दस मिनट में या मुफ़्त डिलीवरी करता है, अपने हेलमेट के रंग का हो गया।

डायरी नई थी। नं. 2 एक ही तूफ़ान में भर गई थी; यह हरी है, एक कोने में दुकान की मुहर लगी है, और इसे शुरु मुझे करना था, पूरी रस्म के साथ: पहले पन्ने पर शीर्षक और एक नया शब्द।

डिलीवरी डायरी 3 · गुनी की। सीक्रेट।

"सीक्रेट" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ती हूँ। और किसी को बताती नहीं। –ज.

मैंने जीभ बाहर निकालकर शीर्षक लिखा और रबर लेने चला गया, कि कहीं टेढ़ा न रह गया हो। जब लौटा, तो उसे जूलिता पहले ही शुरू कर चुकी थी।

"तुम्हारी मदद के लिए मैंने इसे शुरू कर दिया," उसने कहा। "शुक्रिया नहीं चाहिए।"

मैंने उससे मदद नहीं माँगी थी। जूलिता के साथ इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता।

बाक़ी बातें, कि कभी कोई ऐसा पढ़े जो जूलिता नहीं है। दुकान का नाम "नामुमकिन डिलीवरी" है और वह मारा की है, जो जादूगरनी हैं, बैंगनी टोपी पहनती हैं, और जिनकी मुहर लगते ही चिंगारियाँ छोड़ती है, जिनसे बुझी मोमबत्ती की महक आती है। बाईं तरफ़ की शेल्फ़ पर वे वापस आए पार्सल रखती हैं: वे पार्सल जिन्हें कोई पहुँचा नहीं पाया। उनका एक ही नियम है: पाने वाला अगर लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो सुबह होते ही पार्सल उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट आता है, खाने के वक़्त पर लौटती बिल्ली जितना पाबंद। वे बीस थे, और उन्हें हमेशा एक ही इंसान भेजता है, R., जिसके बारे में नीली डायरी में मेरे पास पहले ही छह सुराग थे। जूलिता और मैंने दो पहुँचा दिए हैं, ड्रैगन का एक अंडा और पैरों वाले कुछ बीज जो दौड़ पड़े थे, और दीवार पर, उसकी लिखावट में, हरे रंग से लिखा है: बाक़ी 18।

जूलिता हरे नोटों वाली है। मैं गुनी हूँ, मोहल्ले में नया: मेरा लगभग सारा सामान अब भी डिब्बों में है। और टोन्यो "बिजली" का डिलीवरी बॉय है, पीले बैग वाला, जो शनिवार को हमारे साथ सज़ा काटता है और जिसकी तूफ़ान के बाद से दुकान में अपनी जगह है: स्टूलों के पास उलटा रखा डिलीवरी का एक बक्सा। मारा ने उसे बिना कोई सफ़ाई दिए वहाँ रख दिया था। "फ़िलहाल," उन्होंने कहा। किसी की हिम्मत नहीं हुई पूछने की कि फ़िलहाल कब तक चलता है।

नं. 3 ऊपर वाली शेल्फ़ पर था, उन दो खाली जगहों के बगल में जो अंडे और बीजों ने छोड़ी थीं, लेबल सामने की ओर। मैं उसे पढ़ने गया, खड़े-खड़े और बिना छुए।



टाइपराइटर से लिखी तीन पंक्तियाँ: नं. 3। टोन्यू के लिए। और सबसे नीचे, प्रेषक: R. नाम और आख़िरी पंक्ति के बीच काग़ज़ की एक पूरी ख़ाली पट्टी थी। चारों ओर “वापस आया” की बारह मुहरें। मैंने उन्हें गिना।

जूलिता एक छलाँग में स्टूल से उतरी और मेरे बगल में आ खड़ी हुई। उसने ज़ोर से पढ़ा:

“टो...”

और मुँह बंद कर लिया।

जूलिता किसी शब्द के बीच में कभी चुप नहीं होती। मैंने टोन्यो की तरफ़ देखा और समझ गया क्यों।

मैंने उसे आधा पढ़ा। बाक़ी आधा निगल गई। –ज.

कुछ लोग अचानक लाल हो जाते हैं। टोन्यो नहीं: टोन्यो हिस्सों में लाल होता है। पहले कान। फिर गाल। फिर पूरा चेहरा, हेलमेट के पट्टे तक, और अभी एक आख़िरी सीढ़ी बाक़ी थी, सबसे बुरी वाली, जब चेहरा और हेलमेट एक-दूसरे से अलग पहचाने नहीं जाते। नं. 2 के थरथर-मीटर के बाद से मुझसे ऐसा कुछ नहीं देखा जाता जो बदल रहा हो और जिस पर पैमाना न हो, इसलिए मैंने उसे लिख लिया।

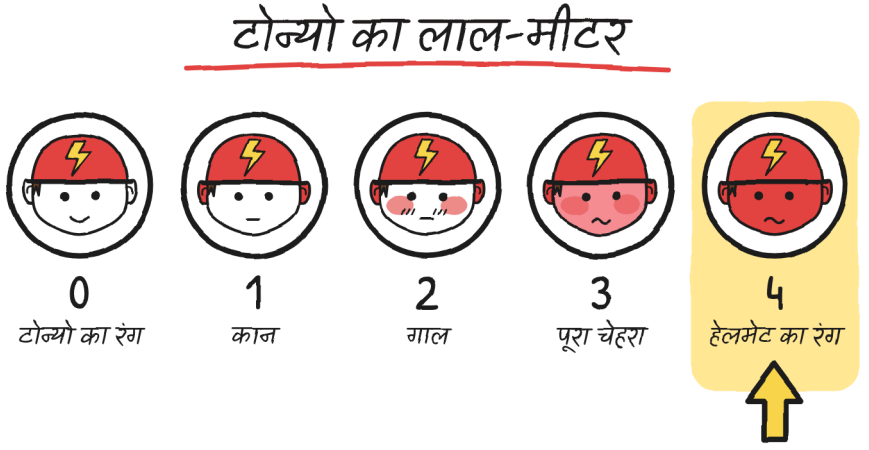

जूलिता बाक़ी पढ़ने के लिए पार्सल की ओर हाथ बढ़ाने लगी।

"वह पार्सल इंतज़ार कर सकता है," टोन्यो ने बहुत जल्दी-जल्दी कहा। "सालों से इंतज़ार ही कर रहा है, है न? तो एक दिन और। या दस। 'बिजली' को कोई जल्दी नहीं है।"

मैंने "बिजली" को पहली बार यह कहते सुना था।

"आज रात कुछ नहीं खुलेगा," मारा ने कहा। "और शेल्फ़ को बिना इजाज़त कोई नहीं छुएगा।"

जूलिता का हाथ हवा में ही रुक गया, लेबल से एक उँगली दूर। किसी ने कुछ नहीं छुआ। और तभी वह फिर बजा।

टिन-टिन।

"वह दरवाज़ा था!" जूलिता ने कहा, एक ऐसी आवाज़ में जो मैंने उसकी कभी नहीं सुनी थी: ज़रूरत से ज़्यादा ऊँची और ज़रूरत से ज़्यादा जल्दी।

दरवाज़ा तब से बंद था जब वेरा गई थीं।

जब मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं एक लिस्ट बनाता हूँ। टिन-टिन के संदिग्ध:

1. दरवाज़ा। (जूलिता का सुझाव। बंद, हवा नहीं, और धक्का देने वाला कोई नहीं।)
2. टोन्यो की साइकिल, फ़ुटपाथ पर, "बिजली" की बेल के साथ। (ट्रिंग करती है, टिन-टिन नहीं। पर है तो बेल।)
3. रबर का मेंढक। (जूलिता ने उसे उसी पल बेक़सूर घोषित कर दिया। कहती है कि वह उसे जानती है।)
4. नं. 3।

मैंने नं. 3 को सबसे आख़िर में रखा, शिष्टाचार के नाते।



मैं जाँचने फ़ुटपाथ पर निकला। रास्ते में मेंढक भी उठा लिया, क्योंकि संदिग्ध से दूर से पूछताछ नहीं होती।

बारिश रुक चुकी थी। सड़क से भीगे डामर की महक आ रही थी और हर गड्ढे में एक लैंपपोस्ट बैठा था। मैंने दरवाज़ा खोला और बंद किया: चर्रर्र। टोन्यो की साइकिल की बेल बजाई: ट्रिंग! मैंने मेंढक दबाया: पीं।

शीशे के उस पार जूलिता उँगली हिलाकर मना कर रही थी। हर आवाज़ पर वही, इधर से उधर, किसी गाड़ी के वाइपर की तरह। इनमें से कोई नहीं था।

मैं वापस अंदर गया और मेंढक को काउंटर पर रख दिया। टोन्यो ने मुझे उसकी तरफ़ देखते देखा और अपने बक्से में कसमसाया।

टिन-टिन।

मैं झुका। टोन्यो का बक्सा शेल्फ़ के पाये से टिका हुआ था।

मैंने उसे वहीं बैठे-बैठे, घुटनों के बल, बना डाला, और जो बना वह एक गोला था, क्योंकि जितना घुमाकर देखता, यह नहीं मिलता था कि शुरु कहाँ से होता है।

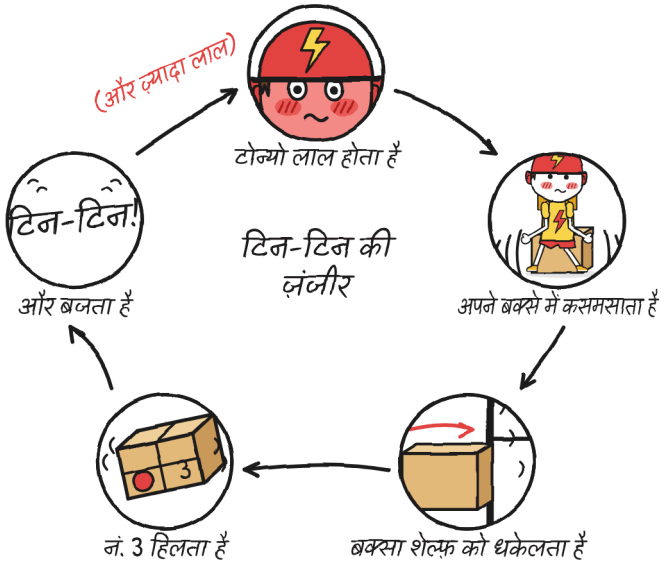

जादू नहीं था। टोन्यो था। नं. 3 के अंदर कुछ है जो हिलाने पर बजता है।

मेरी तरह। –ज.

टोन्यो ने मेरी नज़र का पीछा किया, शेल्फ़ के पाये तक, फिर अपने बक्से को देखा, और तय किया कि वह बिना हिले-डुले बैठा रहेगा।

यह फ़ैसला उतनी देर चला जितनी देर खिंची हुई रबर-बैंड चलती है।

स्थिर। फिर और स्थिर: इतना स्थिर कि उसके सोचने की आवाज़ सुनाई देती थी, "स्थिर", और कनपटी से एक बूँद नीचे सरकती हुई। जूलिता पूरे एक मिनट से चुप थी, जो उसके लिए पानी के नीचे साँस रोकने जैसा है, और देर-सवेर आदमी वही लेकर ऊपर आता है जो मुँह के सबसे पास हो।

"टोन्यू कौन है?"

टोन्यो उछल पड़ा। बक्से ने पाये को धक्का दिया, शेल्फ़ काँपी और नं. 3 बोल उठा, टिन-टिन! उतने ज़ोर से, जितने के हक़दार किसी टिन-टिन को नहीं होना चाहिए। मारा ने छत की तरफ़ देखा, जैसे कोई तीन तक गिन रहा हो।

"यह तो बस एक सवाल था," जूलिता ने कहा। "सवाल शेल्फ़ को धक्का नहीं देते।"

यह वाला देता है।



"वह मैं था," टोन्यो ने अपने जूतों को देखते हुए कहा। "जब मैं छोटा था।"

उसने इतनी धीरे से कहा कि मुझसे ज़्यादा मेंढक ने सुना, जो काउंटर पर उसके मुझसे ज़्यादा पास था।

जूलिता ने मुँह खोला। मैंने उसके सवालों को क़तार में खड़े देखा, रविवार की सुबह बेकरी के बाहर लगी क़तार की तरह, पहला सवाल हाथ में पैसे लिए तैयार। फिर उसने टोन्यो को देखा, जो अब भी अपने जूतों को ही देख रहा था, और मुँह बंद कर लिया।

"मैं और नहीं पूछ रही," उसने कहा।

उसे मुश्किल हुई। उसके पैर से साफ़ दिखा: टक, टक, टक, दुकान के फ़र्श पर।

सवाल जो मैंने नहीं पूछे: नौ। मैंने उन्हें लिख रखा है। –ज.

"और तुमने इसे उसे कभी क्यों नहीं दिया?" मैंने मारा से पूछा।

"बारह बार मैं इसे ले गई हूँ।" किसी को मुहरें गिनने की ज़रूरत नहीं पड़ी। "लेबल देखो: न सड़क, न मकान का नंबर, न उपनाम। मुझे जितने टोन्यू मिले, सबके पास गई।"

उन्होंने उन्हें याद से, उँगलियों पर गिनाया, और मैं उन्हें सुनते-सुनते बनाता गया। एक कैनरी, जिसका नाम सचमुच टोन्यू था और जिसने लेबल पर पैर रख दिया: नहीं चला। दादा अंतोनियो, 71 साल के, जिन्होंने चश्मा लगाया, काग़ज़ दो बार पढ़ा और बोले "काश मैं होता," उसे ऐसे देखते हुए जैसे कोई दुकान की शोकेस देखता है। नहर की एक

नाव, जिसके किनारे पर नाम पेंट किया हुआ था, और जिसने भी दस्तख़त नहीं किए, क्योंकि उसके हाथ नहीं हैं।

मारा के टोन्यू



1. *एक कैनरी।*
(लेबल पर पैर रख दिया। नहीं चलेगा।)

2. *दादा अंतोनियो, 71 साल।*
("काश मैं होता।")

3. *नहर की एक नाव।*
(उसके हाथ नहीं हैं।)

"और टोन्यो?" जूलिता ने पूछा।

"पिछली बार जब मैंने कोशिश की थी, तब मैं उसे जानती नहीं थी," मारा ने कहा और उसकी तरफ़ देखा। "और किसी ने मुझे बताया नहीं कि बचपन में उसे क्या कहते थे।"

मारा ने काउंटर के नीचे से एक बैंगनी कपड़ा निकाला और नं. 3 को ढक दिया, जैसे कोई तोते के पिंजरे को ढकता है ताकि वह सो जाए। फिर उन्होंने टोन्यो से कहा कि वह एक पल को उठे, और उसका बक्सा शेल्फ़ से दो बित्ते दूर खिसका दिया।

"ऐसे। अब तुम जितना चाहो हिल सकते हो।"

टोन्यो जा सकता था। साइकिल दरवाज़े पर खड़ी थी: दस मिनट में वह मोहल्ले के दूसरे छोर पर होता। वह फिर बैठ गया।

मुझे नहीं पता क्यों। फिर भी लिख रहा हूँ।

और चूँकि उसके बक्से में बैकरेस्ट नहीं है, मैंने उसके लिए एक बना दिया: ऊँचा, ज़रा-सा मुड़ा हुआ, एक छोटे गद्दे के साथ, पेंसिल से और बिंदुओं वाली रेखा में, और नीचे छोटे अक्षरों में: "बैकरेस्ट (मेरा आइडिया)"।

तुमसे किसी ने बैकरेस्ट नहीं माँगा था। –ज.



दुकान बंद करते समय टोन्यो सबसे आख़िर में रुका और अपने हेलमेट का पट्टा इतनी धीरे कसने लगा कि "बिजली" में यह गंभीर अपराध माना जाता। मारा एक-एक करके बत्तियाँ बुझा रही थीं; बैंगनी कपड़ा अब भी पार्सल पर पड़ा था, ऊपर वाली शेल्फ़ पर।

"मारा। कल मैं इस बारे में बात करने आऊँगा। पर अकेले में।"

"ये दोनों दुकान के हैं," मारा ने मुड़े बिना कहा।

टोन्यो ने हमारी तरफ़ देखा। पहले जूलिता को; फिर मुझे। मैं स्टूल पर सीधा हो गया।

"ये दोनों ठीक हैं," उसने कहा। "पर 'बिजली' का कोई नहीं।"

वह बाहर निकला और गड्ढों के बीच दूर होता गया, साइकिल को हाथ से पकड़े।

टिन-टिन को मालिक मिल गया था। अब यह जानना बाक़ी था कि मालिक उसे चाहता है या नहीं।

उसकी मदद कैसे करनी है, यह मुझे पहले से पता है। –ज.

मुझे इसी बात की चिंता है।

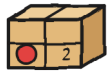

अध्याय 2

मैंने हाँ नहीं कहा

रविवार को दुकान नहीं खुलती। उस रविवार मारा ने शटर आधा ही उठाया, ठीक उतना कि झुककर अंदर जाया जा सके, और उस पर हाथ से लिखा एक पोस्टर टाँग दिया:

बंद (तुम्हारे लिए नहीं)।

टोन्यो ग्यारह बजे आया। अंदर आने से पहले उसने सड़क के एक तरफ़ देखा, फिर दूसरी तरफ़, जैसे सड़क पार करने से पहले देखते हैं। "बिजली" का कोई नहीं आ रहा था। वह बैग को सीने से चिपकाए, ताकि वह कहीं रगड़ न खाए, शटर के नीचे झुका, और दुकान ने उसे बिना आवाज़ किए निगल लिया।

हम साढ़े दस बजे पहुँच गए थे। कहीं ज़रूरत पड़ जाए तो। –ज.

मैंने पोस्टर दो बार पढ़ा था। कहीं नहीं लिखा था "और जूलिता के लिए", या "और गुनी के लिए"। पर मारा ने बिना कुछ कहे हमें अंदर कर लिया, बाईं भौंह ऊपर उठाए, और रास्ता दे दिया।

हम स्टूलों पर उस चेहरे के साथ बैठे जो उसका होता है जो किसी चीज़ का इंतज़ार नहीं कर रहा। यह चेहरा मुझसे किसी से भी बुरा बनता है।

मारा ने नं. 3 काउंटर पर रखा और उसका कपड़ा हटाया।

"पार्सल नंबर तीन। टोन्यू के लिए। क्या वह तुम हो?"

“था।”

“मेरे लिए इतना काफ़ी है। क्या तुम इसे लेना चाहते हो?”

टोन्यो ने डिब्बे की तरफ़ देखा। डिब्बे ने कुछ नहीं कहा।

“मैंने हाँ नहीं कहा।”

“ना भी तो नहीं कहा।”

“मैंने यह कहा कि मैंने हाँ नहीं कहा।”

मैंने कितनी ही बार हाँ कह दी थी, बस इसलिए कि मुझे रुकने दिया जाए। टोन्यो बिना हाँ कहे वहीं बैठा था। मैंने स्टूल का किनारा पकड़ लिया।

“तीन वाक्य,” जूलिता फुसफुसाई। “और एक भी हाँ नहीं है। मैंने गिने हैं।”

मारा ने ज़ोर नहीं दिया।

टोन्यो ने डिब्बा ऐसे पकड़ा जैसे कोई जलता हुआ पतीला पकड़ता है: दोनों हाथों से और छोड़ देने की पूरी इच्छा के साथ। उसने उसे तौला। घुमाया। कान के पास ले जाकर ज़रा-सा हिलाया।

टिन-टिन।

उसने उसे झट से छोड़ दिया और अपने हाथों को देखता रह गया।

“अगर वह इसे घर ले जाए तो?” जूलिता ने कहा। “अगर पार्सल पाने वाले के घर में रात बिता ले, तो वह पहुँचा हुआ माना जाएगा। यह तो तर्क की बात है।”

“वापसी की मुहर तर्क से नहीं चलती,” मारा ने कहा। “वह स्याही से चलती है।”

“मुहर और मैं एक तरह से नहीं सोचते,” जूलिता बुदबुदाई, जो आत्मसमर्पण के जितना क़रीब है उतना मैंने उसे कभी सुना नहीं।

बात साफ़ रहे, इसलिए मैंने एक तालिका बना दी। उसका शीर्षक है: क्या यह डिलीवरी मानी जाएगी?

- उसे देखना: नहीं।
- उसे पकड़ना: नहीं।
- उसे घर ले जाना: नहीं।
- लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त करना: हाँ।

"यह डिलीवरी तुम्हारी है," मारा ने मुझसे और जूलिता से कहा, "गरज वाली डिलीवरी की तरह। तीन शर्तों के साथ।"

उन्होंने उँगलियों पर गिनाईं।

1. तुम दोनों डिब्बा नहीं खोलोगे। और लेबल चिपका रहेगा।
2. नं. 3 दुकान से तभी बाहर जाएगा जब टोन्यो माँगेगा।
3. दस्तख़त वही करे जो इसे पाए, अगर वह चाहे। अगर न करे, तो सुबह होते ही पार्सल लौट आएगा, और यहाँ कुछ हुआ ही नहीं।

जूलिता ने हाथ उठाया, जैसे क्लास में।

"और अगर वह कभी न माँगे?"

"तो कभी नहीं।"

"कभी नहीं" डिलीवरी की कोई तारीख़ नहीं होती। —ज.

टोन्यो बहुत देर चुप रहा। जूलिता ने समय नापा: चार मिनट। "बिजली" के हिसाब से लगभग आधी डिलीवरी। उन चार मिनटों में उसने पार्सल को देखा, दरवाज़े को देखा और अपने हाथों को देखा। जिसे उसने नहीं देखा वह हम थे, और मैं इसके लिए आभारी था।

"मैं इसे ले जाता हूँ," आख़िरकार उसने कहा। "बंद ही। सोचने के लिए। फ़िलहाल।"

"माँग तुम रहे हो?" मारा ने पूछा।

“माँग मैं रहा हूँ।”

मैंने रवानगी की पर्ची बना दी, ताकि कोई कुछ और न कह सके:

- डिब्बा: बंद। हाँ।
- लेबल: चिपका हुआ। हाँ।
- माँगने वाला: टोन्यो। हाँ।
- दस्तख़त: अभी नहीं।

बाहर वही रविवार की धूप थी जो तूफ़ान के बाद निकलती है और हर चीज़ को ऐसे छोड़ जाती है जैसे अभी-अभी धोई गई हो। टोन्यो ने नं. 3 अपनी साइकिल की टोकरी में रखा और, छोड़ते ही, वह बजा: टिन-टिन।

वह हैंडल की तरफ़ देखता रह गया, जहाँ “बिजली” की बेल लगी है, स्लेटी और गोल।

“क्या?” जूलिता ने पूछा।

“कुछ नहीं।”

और वह साइकिल को हाथ से पकड़े पैदल चला गया। टोन्यो लगभग कभी पैदल नहीं चलता।

वह “कुछ नहीं” असल में “कुछ” था। उसकी मदद करनी पड़ेगी। —ज.

दरवाज़े से मैंने नुक्कड़ पर “बिजली” की दो साइकिलें खड़ी देखीं, पीले बैगों के साथ: कमर तक लंबी चोटी वाली एक लड़की और उसके बगल में एक बहुत बड़ा लड़का।

“टोन्यो! टोकरी में क्या ले जा रहे हो?” चोटी वाली ने चिल्लाकर पूछा।

“एक डिलीवरी।”

“किसके लिए?”

“एक ग्राहक के लिए।”

उसने झूठ नहीं बोला। पर जवाब देने से पहले उसने टोकरी में डिब्बा धीरे से घुमा दिया, ताकि लेबल उसकी तरफ़ रहे।



मुझे "बिजली का कोई नहीं" का मतलब समझ आ गया।



उस रात मैंने अपने कमरे की खिड़की का परदा ऊपर ही छोड़ दिया। मेरा घर दुकान के ठीक सामने है: अगर नं. 3 लौटा, तो मैं उसे देख लूँगा। मैंने खिड़की के सामने दो कुर्सियाँ रख दीं, एक अपने लिए और एक, छोटी-सी, अलार्म घड़ी के लिए। दुकान के दरवाज़े के ऊपर वाली छोटी खिड़की, जिसे मारा इसी काम के लिए खुला छोड़ती हैं (पहले दिन मैंने उसे लेटरबॉक्स समझा था), एक काला, स्थिर आयत थी।

"गुनी?" मम्मी ने गलियारे से कहा। "जाग क्यों रहे हो?"

"एक पार्सल की निगरानी कर रहा हूँ।"

"अच्छा। ठीक है। पर निगरानी पजामा पहनकर करना।"

पहले बीस मिनट मैं छोटी खिड़की को देखता रहा; अगले, घड़ी को; बाक़ी रात, डायरी को, क्योंकि इंतज़ार में मुझे हाथों के लिए कोई काम चाहिए होता है। तो खिड़की की चौखट पर, लैंपपोस्ट की रोशनी में, मैंने टोन्यो की सीट सुधार दी। वर्ज़न 1 शनिवार वाला बैकरेस्ट था; वर्ज़न 2 में आर्मरेस्ट हैं और गिलास के लिए एक गोल गड्ढा। मैंने गिलास भी बना दिया, नैपकिन के साथ।

जूलिता भी निगरानी करना चाहती थी, पर उसकी खिड़की आँगन की तरफ़ खुलती है, और आँगन से सिर्फ़ सूखते कपड़ों की निगरानी हो सकती है।

सुबह होते ही वह दिखने से पहले सुनाई दिया।

टिन-टिन, टिन-टिन, टिन-टिन।

वह छतों के ऊपर से बिना जल्दी के आ रहा था, आइसक्रीम की गाड़ी की तरह बजता हुआ, जिसने अभी तय नहीं किया कि किस नुक्कड़ पर रुकना है। एक खिड़की में बत्ती जली, फिर दूसरी, फिर तीसरी: तीन, जैसे कोई हाज़िरी ले रहा हो। एक कुत्ता भौंका, 4 नंबर वाला, जो हर उड़ने वाली चीज़ पर भौंकता है, चाहे वह पार्सल हो या कबूतर। और तभी मैंने उसे देखा: गुलाबी आसमान की पृष्ठभूमि में एक चौकोर, छोटा-सा गट्ठर, जो मेरी खिड़की के बराबर से मेरी सड़क पार करता गया, दुकान के दरवाज़े के ऊपर वाली छोटी खिड़की से अंदर घुस गया, और अंदर पहुँचकर मैंने उसे अपनी शेल्फ़ पर उतरते सुना, आख़िरी, ज़रा छोटे टिन-टिन के साथ, जैसे कोई मेज़ पर चाबियाँ रखता है।

“वही था?” मम्मी ने गलियारे से पूछा, उस इंसान की आवाज़ में जो पूरी तरह सो न पाया हो।

“वही था।”

“तो अब नाश्ता।”

मैं खिड़की के पास एक पल और रुका। जब मम्मी ने दोबारा पुकारा, तो मैं नाश्ता करने चला गया।

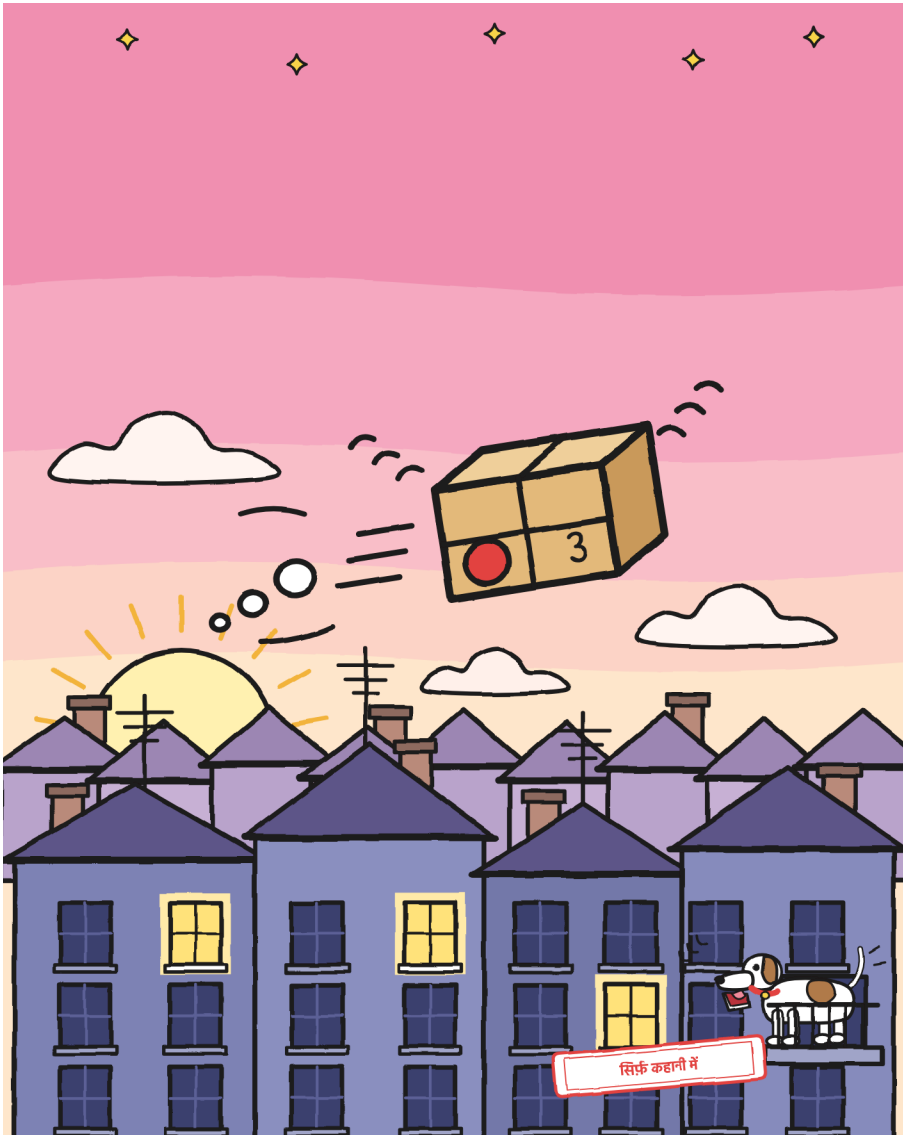

स्कूल के बाद हम दुकान गए। नं. 3 अपनी शेल्फ़ पर था और उस पर एक मुहर और लगी थी, लाल, जिसकी स्याही अभी गीली थी और जिसे किसी ने लगाया नहीं था: तेरह।

मैंने कहा कि उसे फिर शेल्फ़ पर देखकर मुझे बुरा लग रहा है।

“यह सज़ा नहीं है,” मारा ने कहा। “यह नियम है। किसी ने दस्तख़त नहीं किए: वह लौट आता है।”

तेरह मुहरें। इस रफ़्तार से तो डिब्बा दिखेगा ही नहीं। —ज.

टोन्यो पाँच बजकर बीस मिनट पर आया, अपनी डिलीवरी के बाद। उसने यह नहीं पूछा कि वह लौटा या नहीं: उसने उसे अपने घर के ऊपर से गुज़रते सुन लिया था। वह अपने बक्से पर बैठ गया, जो शेल्फ़ से अब भी दो बित्ते दूर था, और पार्सल को बिना देखे देखता रहा, उसी तरह जैसे उस इंसान को देखते हैं जिसके बारे में तुम जानते हो कि वह तुम्हें देख रहा है।

यह मैंने नहीं देखा। उसने ख़ुद मुझे बताया:

टोन्यो ने मुझे क्या बताया

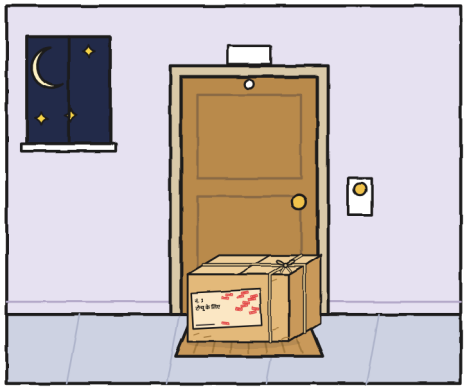

“मैंने उसे पायदान पर छोड़ दिया था। सारी रात।”

“तुमने उसे घर के अंदर क्यों नहीं रखा?” जूलिता ने पूछा।

“घर में मुझे ऐसे बुलाने वाले पहले से काफ़ी हैं।”

उसने यह बिना नाराज़ हुए कहा, उसी सपाट आवाज़ में जिसमें वह पते बताता है। जूलिता ने यह नहीं पूछा कि "काफ़ी" का मतलब कितने। उसके पैर ने बस एक बार टक किया।



"एक दस्तख़त से सब ठीक हो जाता," टोन्यो के जाने के बाद जूलिता ने कहा। "बस एक। दो सेकंड लगते हैं। मैंने अपने दस्तख़त से नापा है।"

यह सच था। उसने एक खुले काग़ज़ पर तीन बार करके दिखाया, अपने हमेशा वाले "ज" के साथ: दो सेकंड, दो सेकंड, और जिस बार टेढ़ा बन गया, ढाई सेकंड।

मैंने डायरी खोली और बॉलपेन से दबा-दबाकर लिखा, ताकि हरा रंग उसे ढक न सके:

उसने नहीं कहा कि हम उसका यह मसला सुलझा दें।

मैंने इतना दबाया कि वाक्य अगले पन्ने पर भी उभर आया। जूलिता ने हरा मार्कर निकाला। उसने धारियाँ आज़माईं, कुंडलियाँ, एक क्रॉस, लहरों का एक बादल। हरा मिटता नहीं, पर वह वाक्य उससे ढका नहीं: वह नीचे ही रहा, पूरा, अपने मोटे अक्षरों के साथ, काग़ज़ में धँसा हुआ।

मैंने पढ़ लिया। मैं सहमत नहीं हूँ। फ़िलहाल। –ज.

मैंने उसे देखा।

मेरे पास एक और आइडिया है। मुझे ऐसे मत देखो। –ज.

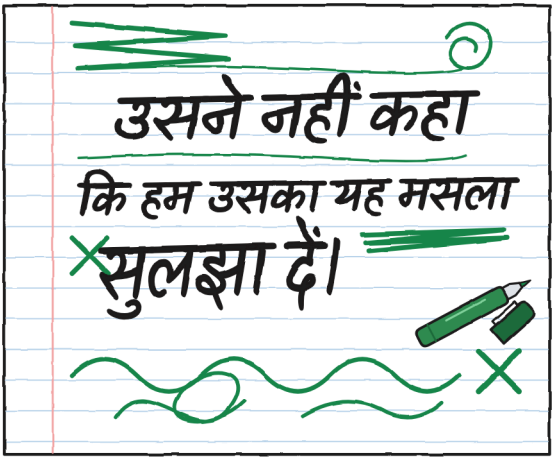
उसने नहीं कहा
कि हम उसका यह मसला
सुलझा दें।



अध्याय 3

ऑटोग्राफ़

मंगलवार को, स्कूल से निकलकर, दुकान के सामने फ़ुटपाथ पर एक मेज़ लगी थी। मेज़ें अपने आप सड़क पर नहीं आतीं, और यह तो सजकर आई थी: ज़मीन तक लटकता पीला मेज़पोश, जूलिता की लिखावट वाला एक पोस्टर और बीच में ढका हुआ एक चौकोर, बिल्कुल स्थिर गट्ठर, उन चीज़ों जैसा जो इंतज़ार करती लगती हैं कि कोई उनसे सवाल पूछे।

पोस्टर पर, हरे रंग में, लिखा था: डिलीवरी वालों के दस्तख़त। उसके नीचे: आज। और उसके भी नीचे, छोटे अक्षरों में: मोहल्ले के सबसे तेज़ लोग।

मेज़ के पीछे जूलिता खड़ी थी, हाथ पीठ के पीछे, और चेहरे पर वही गंभीरता जो टिकट बेचने वाले के चेहरे पर होती है। शो-विंडो के पीछे मारा फ़ोन पर बात कर रही थीं। या कहना चाहिए, सुन रही थीं: छत की ओर देखते हुए सिर हिला रही थीं, जहाँ वे तब देखती हैं जब कोई कॉल लंबी खिंच जाती है।

मैंने ठुड्डी से गट्ठर की तरफ़ इशारा किया।

“यह स्टैंड है,” जूलिता ने मेरे कुछ पूछने से पहले ही कहा। “आराम से दस्तख़त करने के लिए। मैं ऑटोग्राफ़ इकट्ठा करती हूँ।”

स्टैंड, जहाँ तक मैं जानता हूँ, तब काम आता है जब वायलिन बजाते समय स्वरलिपि को टिकाना हो। दस्तख़त के लिए नहीं। पर उसने इतने भरोसे से कहा कि दस सेकंड के लिए मुझे वायलिन के बारे में अपनी जानकारी पर शक होने लगा।

“तुम ऑटोग्राफ़ कब से इकट्ठा करती हो?”

“कल से।”

कल उसने कहा था कि उसके पास एक और आइडिया है। आइडिया के साथ मेज़पोश था।

स्टैंड के ऊपर लाइनों वाली एक शीट रखी थी और सबसे नीचे एक चौखट। या ऐसा लगता था: असल में वह कैंची से कटी एक छोटी खिड़की थी। मैं झुका। मेज़पोश में ठीक उसके नीचे वैसी ही एक और थी।

मैंने एक कोना उठाया। वह स्टैंड नं. 3 था, लिटाया हुआ, लेबल ऊपर की ओर: टोन्यू के लिए, “वापस आया” की तेरह मुहरें, और मेज़पोश के छेद के ठीक नीचे काग़ज़ का एक ख़ाली टुकड़ा, ठीक एक दस्तख़त जितना बड़ा।

मुझे पूरी बात तब समझ आई जब मैंने उसे बनाया, जो चीज़ें समझने का मेरा तरीक़ा है।

“मेरे मार्कर से,” जूलिता ने ख़ुश होकर फुसफुसाया। “कभी न मिटने वाली स्याही। कल से वह नहीं लौटेगा, और उसे तब तक पता भी नहीं चलेगा जब तक हम उसे दिखा न दें। सरप्राइज़!”

उसके चेहरे पर वह भाव था जो तोहफ़ा देने वाले के चेहरे पर होता है, जिसने उसे बहुत सोच-समझकर चुना हो। मार्कर चलाते-चलाते उसकी उँगलियों के सिरे हरे हो गए थे।

मुझे मारा की शर्तें याद आईं। दूसरी मुझे ज़बानी याद थी।

“टोन्यो ने यह नहीं कहा कि नं. 3 दुकान से बाहर जाए,” मैंने कहा। “शर्त दो।”

यह कैसे चलता है

1. *शीट, अपनी छोटी खिड़की वाली।*

2. *मेज़पोश, अपने छेद वाला।*

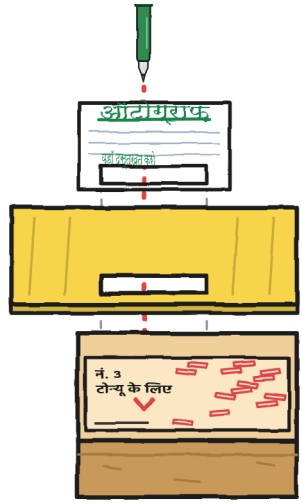

3. *नं. 3 का लेबल, उसका ख़ाली हिस्सा।*

4. *जो खिड़की में दस्तख़त करता है... वह लेबल पर दस्तख़त कर देता है।*

"उसे अच्छा लगेगा।"

"और मारा?"

"वे फ़ोन पर थीं। मैंने कहा कि यह ऑटोग्राफ़ की मेज़ है। और है भी।"

"और स्टैंड?"

"यह उन्होंने पूछा नहीं।"

मैंने उसे फ़्लोरा और आठवें बीज की याद दिलाई: जूलिता ने फ़्लोरा को समय से पहले दस्तख़त नहीं करने दिए थे।

"वह और बात थी। वह अधूरी डिलीवरी थी। यह शॉर्टकट है।"

"तो तुम करो," मैंने कहा। "मैं नहीं।"

मैं दुकान की सीढ़ी पर बैठ गया, मेज़ की ओर पीठ करके और बाँहें मोड़कर।

वह सीढ़ी पर बैठ गया। बड़ी शान से। किसी काम नहीं आया। –ज.



“बिजली” हमारी सड़क से पाँच बजकर दस मिनट पर गुज़रती है। हम उन्हें दिखने से पहले सुन लेते हैं, जो बेलों के साथ होता ही है। तीन लोग थे, एक के पीछे एक: सबसे आगे ज़ोई, जो हमेशा वहीं रहती है; ब्रूनो, विशाल, ऐसे पैडल मारता हुआ जैसे अलमारी ढो रहा हो; और टोन्यो सबसे आख़िर में, थोड़ा अलग, जैसे क़तार में तीन साइकिलें हों और उसकी उस क़तार की न हो।

बाद में मैंने उन्हें वैसा ही बनाया जैसे वे आए थे, एक-एक करके।

ज़ोई, “रॉकेट”, वही है कमर तक लंबी चोटी वाली, जिसने रविवार को पूछा था कि टोन्यो की टोकरी में क्या है। वह सबसे तेज़ है और निकनेम वही रखती है। ब्रूनो के पास पहिए के लिए पैच है और साइकिल के फ़्रेम पर हवा का पंप, कहीं ज़रूरत पड़ जाए तो।

ज़ोई ने पोस्टर देखा और ब्रेक लगा दिया।

“ऑटोग्राफ़? हमारे?” उसने कहा और साइकिल से उतर गई।

किसी ने उनसे आज तक ऑटोग्राफ़ नहीं माँगा था। इसीलिए यह काम करता है। –ज.

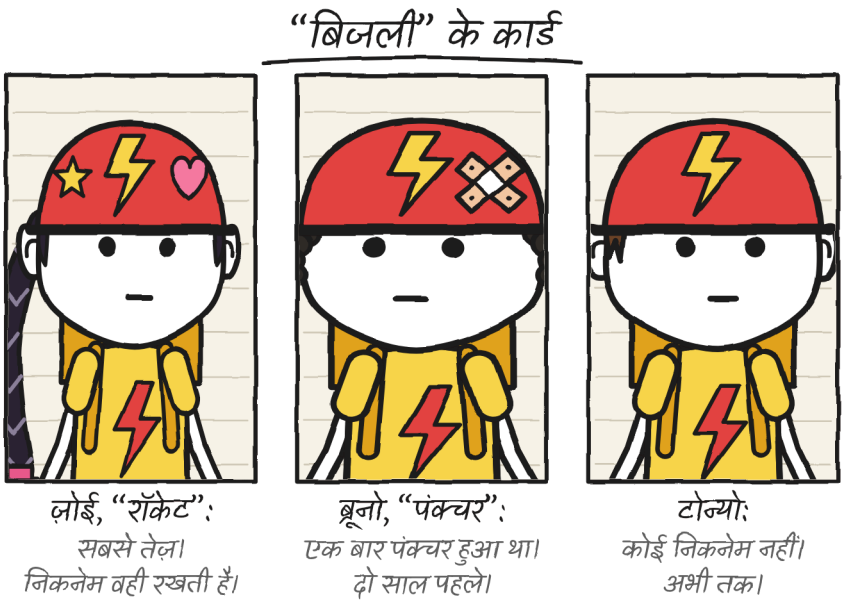

ज़ोई ने सबसे पहले दस्तख़त किए, "ओ" में एक तारा बनाकर। ब्रूनो ने "ब्रूनो" लिखा, धीरे-धीरे, दाँतों के बीच जीभ दबाए, हर अक्षर ख़ूब गोल बनाकर। ज़ोई ने उसके हाथ से पेन ले लिया, उसे एक लकीर से काट दिया और बगल में लिख दिया "पंक्चर"।

"'बिजली' में निकनेम हटाए नहीं जाते," ब्रूनो ने मुझे समझाया, बिना नाराज़ हुए। "मैं एक बार पंक्चर हुआ था।"

वह दो साल पहले पंक्चर हुआ था। एक अकेले पहिए के लिए यह निकनेम बहुत भारी है।

टोन्यो साइकिल से उतरा नहीं था। वह मेज़ को उसी तरह देख रहा था जैसे रविवार को उसने नं. 3 को देखा था: दूर से, दोनों हाथ हैंडल पर।

"अब तुम्हारी बारी, टोन्यो," जूलिता ने कहा। "यहाँ नीचे, इस चौखट में। यह सम्मान की जगह है।"

और उसने उसे अपना हरा मार्कर पकड़ा दिया।

टोन्यो से आज तक किसी ने ऑटोग्राफ़ नहीं माँगा था। वह साइकिल से उतरा और सीधा खड़ा हो गया।

मैंने सिर घुमा लिया था। मैं यह सब सीढ़ी से देख रहा था, मुँह में "मेरा इससे क्या लेना-देना" भरे हुए।

मैं उठ खड़ा हुआ। मैंने यह तय भी नहीं किया: मेरे शरीर ने कर दिया, हिचकी की तरह, मुझसे पूछे बिना।

"टोन्यो, रु..."

मैंने देर कर दी। टोन्यो ने दस्तख़त करने के लिए स्टैंड झटके से अपनी ओर खींचा और मेज़पोश के नीचे कोई मुझसे पहले बोल पड़ा।

टिन-टिन!

एक पल के लिए सब कुछ थम गया: शीट, टोन्यो का हाथ मार्कर लिए खिड़की से एक उँगली दूर, गट्ठर के ऊपर झुके चारों चेहरे। मैं अभी मेज़ तक पहुँचा भी नहीं था।

टोन्यो ने मेज़पोश को एक कोने से, दो उँगलियों से, उठाया।


आटोरिक्शा
पंक्चर
टिन-टिन!

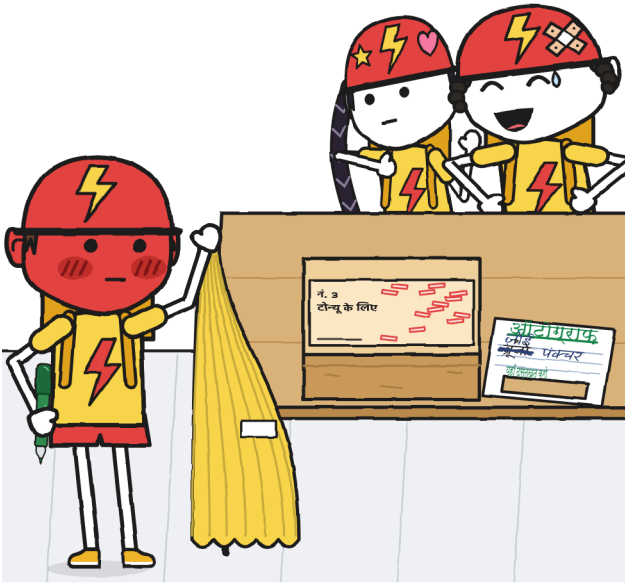

“टो-न्यू के लिए,” ज़ोई ने धीरे-धीरे पढ़ा, जैसे कोई इनाम पढ़ता है।

“टोन्यू?” ब्रूनो ने कहा और हँस पड़ा।

ज़ोई नहीं हँसी। ज़ोई सोच रही थी।

जूलिता ने नज़र चौखट की तरफ़ झुका ली।

टोन्यो चिल्लाया नहीं। उसने मार्कर की टोपी धीरे से लगाई, जब तक क्लिक की आवाज़ न आ गई, और उसे शीट पर रख दिया। बिना दस्तख़त किए।

“‘बिजली’ किसी जाल पर दस्तख़त नहीं करती।”

फिर उसने हैंडल पकड़ा और पैदल चल दिया, साइकिल की उस घड़ी जैसी टिकटिकाहट के साथ जो तब होती है जब कोई पैडल नहीं मारता। कोई उसके पीछे नहीं गया। मैं भी नहीं।

वह हेलमेट के रंग का था, गर्दन तक। पर यह शर्म वाला लाल नहीं था। यह कोई और ही था।

लाल-मीटर में उसके लिए कोई नंबर नहीं है। –ज.

मारा बैंगनी कपड़ा लेकर बाहर आईं। दरवाज़े पर वे रुक गईं, कंधे के ऊपर से शेल्फ़ की ख़ाली जगह देखी, मेज़ देखी और जूलिता को देखा। उन्होंने यह नहीं पूछा कि किसने किया।

उन्होंने नं. 3 को ढका और गोद में उठा लिया।

"यह पार्सल पहुँचाया नहीं गया है," उन्होंने ज़ोई और ब्रूनो से कहा। "और लेबल पर क्या लिखा जाए, यह टोन्यो का मामला है।"

ब्रूनो ने मुस्कुराना बंद कर दिया था। ज़ोई ने एक बार पीछे मुड़कर देखा, अब बैंगनी हो चुके गट्ठर की ओर। वे अपनी साइकिलों पर चढ़े और बेल बजाए बिना चले गए। मुझे जहाँ तक याद है, ऐसा पहली बार हुआ था।



मैंने जूलिता को सामान समेटने में मदद की: मेज़पोश, पोस्टर, दो दस्तख़त और एक छेद वाली शीट। मार्कर उसने ख़ुद रखा, बिना टोपी खोले। मैंने उससे "मैंने कहा था" नहीं कहा। "कोई बात नहीं" भी नहीं कहा, क्योंकि बात तो थी।

हमने मेज़पोश को दोनों ने मिलकर तह किया, हर एक अपने सिरे से। हमने कोने धीरे-धीरे पास लाए। छेद बीच में आ गया।

"तुमने कुछ नहीं किया," उसने कहा।

उसने यह मुझे बाहर रखने के लिए कहा था। यह एक तोहफ़ा था, और एक पूरी तह तक मैं उसे रख लेने को था: मैंने कुछ काटा नहीं था, न किसी शेल्फ़ से कुछ उतारा था। मैंने

एक ऐसी सिलवट सीधी की जो थी ही नहीं। अपना सिरा उसके सिरे से मिलाया। सीढ़ी से लेकर उस जगह तक, जहाँ मेज़ रखी थी, फ़ुटपाथ की टाइलें गिनीं।

बारह भी नहीं थीं। वे पूरी शाम मेरे सामने थीं।

"मैंने देर से बताया," मैंने मेज़पोश को देखते हुए कहा। "पहले कह सकता था। या मारा को बुला सकता था।"

जूलिता ने जवाब नहीं दिया। उसने मेरे हाथ से मेज़पोश लिया, ज़रूरत से एक तह ज़्यादा मोड़ा और मुझे लौटा दिया।

फिर वह अंदर गई और मारा को सब बता दिया, अकेले, बिना कुछ छोड़े। मैं दरवाज़े पर रुका रहा, मेज़पोश बाँहों में लिए। वहाँ से सब सुनाई दे रहा था: खिड़की, मेज़पोश, शेल्फ़, फ़ोन। मारा ने उसे अंत तक सुना।

"टोन्यो को," मारा ने जूलिता के ख़त्म करते ही कहा, "तुम ख़ुद बताओगी।"



बुधवार को टोन्यो पाँच बजकर दस मिनट पर गुज़रा और रुका नहीं। वह तेज़ी से गुज़रा, सीधे देखते हुए, उस रफ़्तार से जो न होने का एक और तरीक़ा है। पाँच बजकर बीस मिनट पर वह फिर गुज़रा: मैंने उसे आते सुना, न रुकते सुना, जाते सुना। जो दस मिनट में या मुफ़्त डिलीवरी करता है, उसके लिए एक ही सड़क से तीन बार बिना रुके निकलना दुकान में न घुसने का बहुत अजीब तरीक़ा है। यह काफ़ी हद तक दरवाज़ा खटखटाने जैसा था।

मैं उसी सीढ़ी पर था।

तीसरी बार तक जूलिता फ़ुटपाथ के बीच में एक काग़ज़ लिए खड़ी थी। वह टोन्यो को दो बार गुज़र जाने दे चुकी थी।

उसने काग़ज़ दोनों हाथों से, चेहरे की ऊँचाई पर पकड़ा, हवाई अड्डों के तख़्तों की तरह, और टोन्यो ने उसे साइकिल पर बैठे-बैठे पढ़ा, एक पैर ज़मीन पर, बिना छुए। तीन वाक्य और एक शब्द: "मैंने तुम्हारा पार्सल बाहर निकाला।" "मैंने तुम्हें चकमा देना चाहा।" "मैंने

तुम्हारा लेबल दूसरों को दिखा दिया।" और नीचे, अकेला और बड़ा, "माफ़ करना।" मैं इसे शब्दशः जानता हूँ क्योंकि बाद में उसने इसे मेरी डायरी में उतार दिया। उसमें न कोई "लेकिन" था, न "जानबूझकर नहीं", न "मदद के लिए"। मैंने इसे दो बार ढूँढकर जाँचा।

उस पर दस्तख़त था "—जूलिता"। जूलिता हर चीज़ पर सिर्फ़ "ज" से दस्तख़त करती है। इस बार उसने सारे अक्षर लिख दिए थे।

"ठीक है। पढ़ लिया," टोन्यो ने कहा।

"क्या तुम मुझे माफ़ करते हो?"

यह काग़ज़ पर नहीं था। जूलिता ने उँगलियाँ शीट के किनारे पर कस लीं।

"मैंने कहा कि मैंने पढ़ लिया।"

टोन्यो ने पैर पैडल पर रखा और चला गया। इस बार पैडल मारते हुए, बिना जल्दी के और बिना रुके। जूलिता सड़क को देखती रही, फिर उसने काग़ज़ अपनी डंगरी की जेब में रख लिया, बिना तह किए।

उस शाम, दुकान में, टोन्यो का बक्सा ख़ाली रहा।

मैंने पूरा नाम लिखकर दस्तख़त किए। इतना तो करना ही था। –ज.



अध्याय ५

एक छोटी साइकिल

गुरुवार को टोन्यो सड़क के दोनों तरफ़ देखे बिना दुकान में आया।

रविवार को, अंदर आने से पहले, उसने इधर-उधर देखा था, उस तरह जैसे सड़क पार करते हुए देखते हैं जब गाड़ियों पर भरोसा न हो। इस बार वह सीधा अंदर आया, हेलमेट पहने। अब "बिजली" का कोई बचा ही नहीं था जिससे छिपना पड़े: जिन दोनों को पता चलना था, उन्हें मंगलवार को ही पता चल गया था, मेज़पोश समेत।

हमें उसकी उम्मीद नहीं थी। मंगलवार से जूलिता और मैं कम और सँभलकर बात करते थे, उन दो लोगों की तरह जो आपस में गिलासों की एक ट्रे उठाए चल रहे हों। जूलिता ने ज़ोर से योजनाएँ बनाना छोड़ दिया था, और यही सबसे ज़्यादा खटकता था: जैसे फ़्रिज बंद होता है और तभी तुम्हें पता चलता है कि वह बज रहा था।

वह बग़ल में एक साइकिल दबाए था।

उसकी असली साइकिल बाहर दीवार से टिकी रह गई थी। यह लाल थी, और इतनी छोटी कि वह उसे ऐसे उठाए था जैसे कोई ब्रेड का डंडा उठाता है, और उसके हैंडल पर कबाड़ वाली कोठरी की धूल के रोएँ चिपके थे।

वह उसकी साइकिल नहीं थी। या थी: उसकी पहले वाली साइकिल।

वह अपने बक्से के पास से बिना बैठे गुज़र गया। बक्सा वहीं था जहाँ मारा ने उसे शनिवार को छोड़ा था: उलटा, स्टूलों के पास, ख़ाली। जूलिता अपने स्टूल से उठने को हुई और फिर बैठ गई। उसने ऐसा दो बार किया।

"रविवार से मेरे सिर में एक टिन-टिन बज रहा है," टोन्यो ने कहा, मारा से, और किसी से नहीं। "मुझे लगता है मुझे पता है कि वह किसका है। मैं देखना चाहता हूँ कि मुझे ठीक याद है या नहीं। मैं इसे खोलना चाहता हूँ। पर यहाँ नहीं। जहाँ शोकेस न हो।"

मारा ने यह नहीं पूछा कि क्यों। उन्होंने नं. 3 को उसकी शेल्फ़ से उतारा और हमें दुकान के पीछे वाले कमरे में ले गईं।

उस कमरे में बिना शेड का एक बल्ब है, डोरी और पैकिंग पेपर की अलमारियाँ, दीवार से टिकाकर रखे डिलीवरी के बोरे और एक छोटी-सी मेज़, जिस पर मारा ने डिब्बा रख दिया।

"खोलकर देखना दस्तख़त करना नहीं है," उन्होंने कहा, और टोन्यो की ओर देखकर कहा, जैसे कोई छाता थमाता है: इसलिए नहीं कि बारिश हो रही है, बल्कि कहीं हो जाए तो। "दस्तख़त नहीं हुए, तो सुबह होते ही वह लौट आएगा।"

टोन्यो ने सिर हिलाया।

जूलिता दरवाज़े पर रुकी रह गई थी, चौखट के दोनों ओर एक-एक पैर रखे।

"क्या मैं रुक सकती हूँ?" उसने पूछा। उसने पूछा।

टोन्यो ने देर लगाई। कितनी, मुझे नहीं पता: समय नापना जूलिता का काम है, और जूलिता उस वक़्त व्यस्त थी।

"अगर कुछ नहीं छुओगी।"

"न डिब्बे को, न इस बात को।"

वह कोने में एक बोरे पर बैठ गई।

टोन्यो ने हेलमेट उतारकर एक कील पर टाँग दिया। हेलमेट के बिना उसके भूरे बाल दबे हुए दिखे और कान, जो अब मंगलवार जितने लाल नहीं थे। फिर उसने डोरी खोली, जो पैकिंग वाली थी और काग़ज़ के रंग की हो चुकी थी। अंदर अख़बार था, इतना पुराना कि अपने-आप फट रहा था। टोन्यो उसे उँगलियों के सिरों से खोलता गया। और काग़ज़ के बीच...

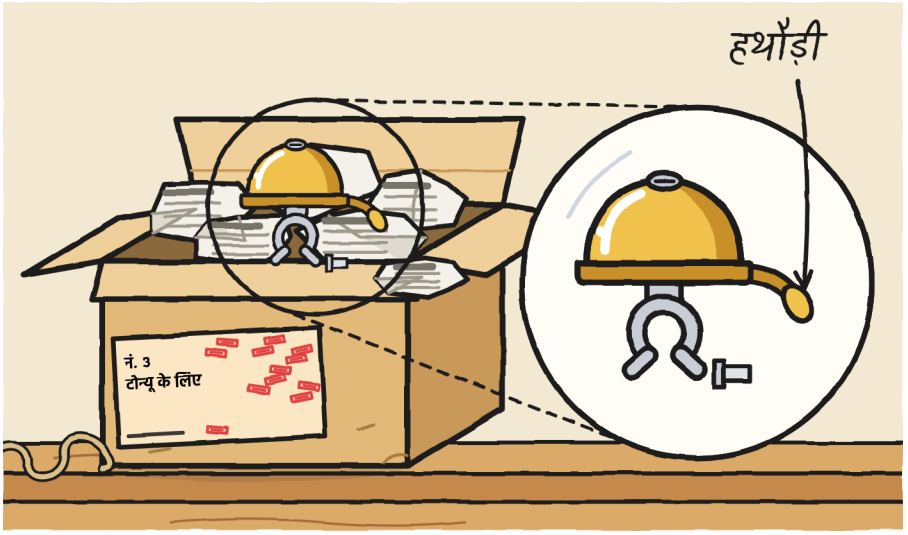

साइकिल की एक घंटी। छोटी, सुनहरी, एक स्प्रिंग से जुड़ी छोटी हथौड़ी वाली: ज़रा-सा हिलाओ तो बज उठती है।

नं. 1 काटता था। नं. 2 भागता था। नं. 3 बस बजता है।

न ड्रैगन, न पंजे। एक घंटी। मुझे पसंद है। –ज.

काग़ज़ के नीचे चार तह की हुई एक पर्ची थी। टोन्यो ने उसे मेज़ पर खोला। लिखावट कसी हुई और टेढ़ी थी, जैसे चलती बस में लिखी गई हो। एक कोने में स्याही का धब्बा था:

"टोन्यू: मैंने कहा था कि यह फिर बजेगी। अब यह बजती है। देर के लिए माफ़ करना। —R."

और नीचे:

"पुनश्च: शायद तुम बड़े हो गए हो। घंटी नहीं हुई।"

टोन्यो ने उसे दो बार पढ़ा।

"कितनी बुरी लिखावट है," उसने कहा।

और काफ़ी देर तक और कुछ नहीं।

R. के वादे देर से पूरे होते हैं। फ्लोरा ने ऐसा कहा था। कितनी देर से, यह नहीं कहा। —ज.

फिर टोन्यो ने डिब्बा एक तरफ़ किया और छोटी साइकिल मेज़ पर रख दी।

मैंने साइकिल बनाई, तीरों के साथ।

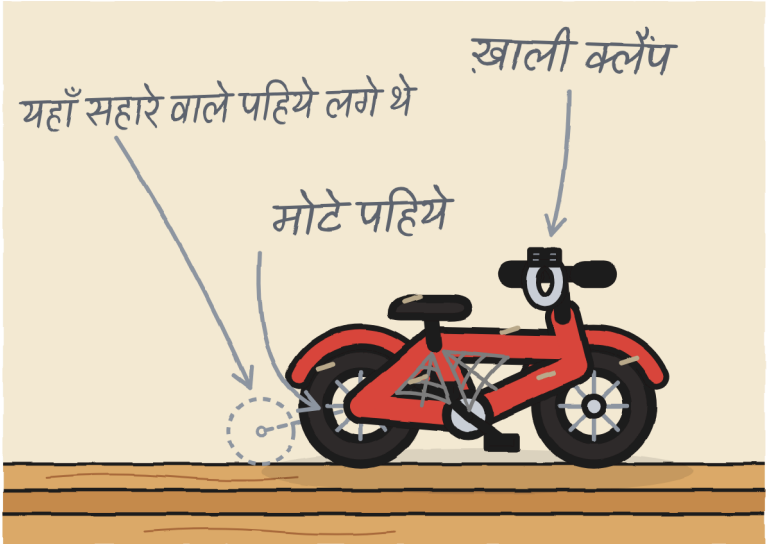

मोटे पहिये; पिछले पहिये पर निशान, जहाँ सहारे वाले पहिये लगे थे; और हैंडल पर ख़ाली क्लैंप, अपने पेंच के साथ।

"यह मेरी थी," टोन्यो ने कहा। "इस पर यही घंटी लगी थी। एक दिन यह बजना बंद हो गई: क्लैक की आवाज़ आने लगी। किसी ने मुझसे कहा: 'मुझे दे दो, टोन्यू, मैं ठीक करके लौटा दूँगा।'"

"किसने?" जूलिता के मुँह से निकल गया, और उसने दोनों हाथों से मुँह ढक लिया।

"चेहरा मुझे याद नहीं। घंटी याद है। और यह कि मैंने बहुत इंतज़ार किया।"

जूलिता के दोनों हाथ अब भी मुँह पर थे।

"घर में मुझे अब भी टोन्यू कहते हैं," टोन्यो ने कहा। "'बिजली' में नहीं। 'बिजली' में मैं टोन्यो हूँ: मैंने पहले दिन फ़ॉर्म में ख़ुद लिखा था।"

मैंने उसे 'बिजली' के पेन से फ़ॉर्म के नाम वाले खाने में टोन्यो लिखते सोचा, बिना किसी के कुछ कहे: मोहल्ले का इकलौता नाम जो उसे किसी और ने नहीं दिया था।

"और टोन्यू में बुराई क्या है?" मैंने पूछा। मैंने सचमुच पूछा, बिना किसी इरादे के। सवालों के साथ मेरा वही होता है जो हिचकी के साथ: निकल पड़ते हैं।

"कुछ नहीं। जब तक ज़ोई न कहे। 'बिजली' में निकनेम हटाए नहीं जाते। ब्रूनो को देखो।"

"ब्रूनो ने मंगलवार से अब तक मुझे छह बार टोन्यू कहा है," उसने जोड़ा। "मैंने गिने हैं।"

जूलिता अपने कोने में छोटी हो गई।

किसी को पता नहीं था कि बात आगे कैसे बढ़ाएँ। तभी जूलिता ने पूछा:

"क्या तुम अब भी इसमें बैठ सकते हो?"

वह रोक नहीं पाई।

मारा ने साइकिल को मेज़ से ज़मीन पर उतारा, उस सावधानी से जिससे किसी को ऊँचे स्टूल से उतारते हैं। टोन्यो ने साइकिल को देखा। मारा को देखा। वह बैठ गया।

आ गया। थोड़ा-बहुत। घुटने कानों तक आ रहे थे और कोहनियाँ दोनों तरफ़ निकली थीं।

मारा ने ऐसी आवाज़ निकाली जो किसी और के मुँह से हँसी होती। टोन्यो भी हँस पड़ा। मैंने उसे शनिवार से हँसते नहीं देखा था। मंगलवार को ब्रूनो हँसा था; इस बार वह ख़ुद हँसा। दोनों की आवाज़ एक जैसी नहीं होती।

लाल-मीटर: 0। लिख रही हूँ, क्योंकि यह भी गिना जाता है। –ज.

मेरे मन में एक बात आई थी, और मुझे तय करना पड़ा कि उसे कहना मदद करना है या धकेलना। टोन्यो के साथ, उस तरह बैठे हुए, एक ऐसी साइकिल पर सिकुड़े हुए जो अब उसके नाप की नहीं थी, मुझे दोनों के बीच का फ़र्क़ बाल जितना लगा। मैंने उसे सलाह की तरह नहीं, जानकारी की तरह कहा।

“तुम्हारी अब वाली साइकिल पर तो पहले से बेल है,” मैंने कहा। “‘बिजली’ वाली। इसे लगाना ज़रूरी नहीं है। तुम इसे रख सकते हो। या इसे लौट आने दे सकते हो।”

“मुझे पता है,” टोन्यो ने कहा।

पर उसने मुझे ऐसे देखा जैसे उसे यह किसी ने पहले कभी कहा ही न हो।

अपने कोने में जूलिता ने मुझे सुनकर सिर उठाया। उसने कुछ नहीं कहा। साफ़ दिखा कि वह इसे सँजो रही है।

वह ग्यारह मिनट चुप रही, सुनती रही, मार्कर एक तरफ़ रखकर और हाथ डंगरी की जेबों में डाले। ग्यारह मिनट वाली बात मुझे इसलिए पता है कि बाद में उसने ख़ुद मेरी डायरी में लिख दी थी।

ग्यारह मिनट। मेरी ज़बान सो गई। –ज.

“मैं इसे अकेले आज़माना चाहता हूँ,” टोन्यो ने कहा।

हम तीनों बाहर निकल आए। टोन्यो ने पीछे वाले कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया।

जूलिता दुकान के दूसरे कोने में चली गई, ताकि सुन न सके। मैंने, सुनने से बचने के लिए, चित्र बनाया: टोन्यो की सीट में अब छतरी लग गई है। फिर भी सुनाई दिया। मारा ने कुछ डोरियाँ सजाईं जो पहले से सजी थीं।

टिन-टिन।

यह वही टिन-टिन था जो शनिवार को सुना था। फिर एक और। और फिर बहुत देर तक कोई नहीं। हम तीनों में से कोई दरवाज़े की तरफ़ नहीं देख रहा था।

जब वह बाहर निकला, तो एक हाथ में घंटी थी और बग़ल में डिब्बा। छोटी साइकिल पीछे वाले कमरे में रह गई, बोरों से टिकी, अपने ख़ाली क्लैंप के साथ।

“मैं इसे कल तक ले जा रहा हूँ। बिना दस्तख़त किए।”

“तो सुबह होते ही वह लौट आएगा,” मारा ने कहा।

“लौट आए। मैं जानना चाहता हूँ कि इसे एक रात रखना कैसा होता है।”

“और अगर वह घंटी को डिब्बे के बाहर छोड़ दे तो?” मैंने पूछा।

“यह मैंने कभी आज़माया नहीं,” मारा ने कहा। “और मैं इसे सुबह सात बजे आज़माने वाली भी नहीं।”

टोन्यो ने सब कुछ वापस अंदर रख दिया: घंटी और पर्ची।



शुक्रवार को, सुबह होते ही, मेरी सड़क फिर बज उठी: टिन-टिन, टिन-टिन, टिन-टिन, छतों के ऊपर से, बिना जल्दी के। वही तीन खिड़कियाँ जलीं। वही कुत्ता भौंका। नं. 14 की वापसी।

पहले का मैंने नहीं देखा। उसने उस शाम अपने बक्से पर बैठे, फ़र्श को देखते हुए, मुझे बताया:

“इस बार वह पायदान पर नहीं सोया। वह मेरे सिरहाने की मेज़ पर सोया। सुबह होते ही वह शीशे से टकराने लगा, और मैंने खिड़की खोल दी।”

“और कैसा होता है?” मैंने पूछा। “उसे एक रात रखना।”

टोन्यो ने देर लगाई।

“लंबी,” उसने कहा।

उस शाम मैंने टोन्यो की दोनों साइकिलें एक-दूसरी के बग़ल में बनाईं। अब वाली पर मैंने घंटी लगा दी, जो बहुत अच्छी लगती है। नीचे मैंने लिखा “पहले” और “अब”।

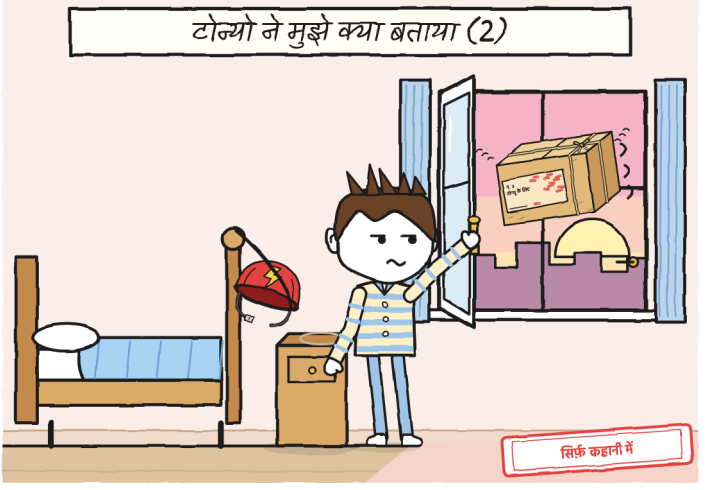

उसने एक पार्सल के लिए खिड़की खोल दी। कितना शिष्ट। –ज.

जूलिता ने मेरे चित्र पर एक पर्ची चिपका दी, ठीक हैंडल पर, मेरी अभी-अभी बनी घंटी को ढकती हुई:

अभी तक नहीं लगाई है। –ज.

मैंने उसे एक कोने से नाख़ून से उखाड़ने की कोशिश की।

वह सही थी। मुझे थोड़ा बुरा लगता है।



अध्याय 5

अकेले में

शुक्रवार की शाम नं. 3 अपने शेल्फ़ पर था, चौदह मुहरों के साथ।

टोन्यो अपने बक्से में बैठा उसे दूर से देख रहा था।

जूलिता दो दिन से कुछ तैयार कर रही थी। मुझे यह इसलिए पता था कि दो दिन से उसने मुझे बताया नहीं था कि क्या।

मुझे सबसे बुरे की आशंका हुई। पिछली बार जब जूलिता ने चुपके से कुछ तैयार किया था, उस चुपके में मेज़पोश लगा था।

इस बार मैंने सबसे पहले यही देखा कि मेज़पोश नहीं है। न मेज़, न स्टैंड, न कैंची से कटी कोई छोटी खिड़की: बस कॉपी का एक पन्ना, लाइनों वाला। जूलिता ने उसे बिना एक शब्द बोले टोन्यो के घुटनों पर रख दिया और हाथ पीठ के पीछे किए दीवार तक पीछे हट गई, ज़रूरत से दो क़दम ज़्यादा। मैंने गिने।

वह दो विकल्पों वाली एक शीट थी।

टोन्यो ने उसे दो बार पढ़ा; दूसरी बार सिर्फ़ B। मैं, जो उसके कंधे के ऊपर से पेरिस्कोप जितनी शालीनता से झाँक रहा था, तीन बार पढ़ गया, जाल ढूँढते हुए।



टोन्यो ने नज़र उठाई और मारा की तरफ़ देखा।

“अगर मैं दस्तख़त करूँ, तो किसे पता चलेगा?”

उसने यह लाल-मीटर पर 1 के साथ पूछा: कान।

“मुझे। और मेरी रजिस्टर वाली किताब को, जो इस दराज़ से बाहर नहीं जाती।”

मारा ने काउंटर की दराज़ उतनी ही खोली कि दिख जाए: एक मोटी किताब, रबर-बैंड से बंद। उन्होंने दराज़ को कूल्हे से बंद कर दिया।

“और ‘बिजली’ को?”

“मैं ‘बिजली’ को नहीं बताऊँगी। रजिस्टर पोस्टर नहीं होता।”

जूलिता ने मुँह खोला और फिर बंद कर लिया। मारा के पीछे, दीवार पर, हरा पोस्टर अब भी कह रहा था: बाक़ी 18।

पोस्टर पर नंबर होते हैं। नाम दराज़ में रहते हैं। —ज.

टोन्यो अपने बक्से से उठा। बक्से ने खोखली-सी आवाज़ की, उस बक्से की जिसमें अब कोई नहीं बैठा।

“B वाला।”

जूलिता उछली नहीं। मैंने उसे न उछलते देखा।

उसने मुट्ठियाँ इतनी भींचीं कि उँगलियों के जोड़ सफ़ेद पड़ गए।

“पीछे वाले कमरे में,” टोन्यो ने आगे कहा। “और मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों वहाँ रहो।”

“मैं भी?” जूलिता ने पूछा।

“तुम्हें सबसे ज़्यादा इंतज़ार है कि मैं दस्तख़त करूँ। मैं तुम्हें सामने रखना पसंद करूँगा।”

नं. 3 को उसकी शेल्फ़ से उतारने का काम मेरे हिस्से आया। मैं नीले स्टूल पर चढ़ा और उसे दोनों हाथों से उतारा, साँस रोके, जैसे कोई सूप की कटोरी किनारे तक भरी हुई ले जाता है। फिर भी वह बजा: एक छोटा-सा टिन-टिन, शिष्टाचार वाला, जिसका मतलब था “इजाज़त हो तो।”



हम पीछे वाले कमरे में लौट आए। टोन्यो ने हेलमेट उतारकर एक बोरे पर रख दिया, पट्टा लटकता हुआ।

मैंने नं. 3 मेज़ पर रखा। टोन्यो ने ढक्कन उठाया और घंटी और पर्ची फिर निकालीं। उन्हें उसने बल्ब के नीचे रखा: घंटी, सुनहरी, करवट लिए, हथौड़ी अपने स्प्रिंग पर शांत; पर्ची, खुली हुई और हाथ के किनारे से सीधी की हुई, R. की ख़राब लिखावट के साथ, जो उस रोशनी में एक चित्र जैसी लग रही थी।

उसने उन्हें धीरे-धीरे देखा, जैसे कोई छुट्टे पैसे गिनता है।

“दस्तख़त करने से पहले मैं देखता हूँ कि क्या दस्तख़त कर रहा हूँ,” उसने किसी की तरफ़ देखे बिना कहा।

जूलिता अपनी टी-शर्ट के रंग की हो गई।

जूलिता ने उसे अपना हरा मार्कर दिया, टोपी लगी हुई। उसने उसे पिछली तरफ़ से दिया, नोक अपनी ओर करके, जैसे कैंची थमाई जाती है। फिर वह कोने में गई और एक बोरे पर बैठ गई, बहुत सीधी, ठुड्डी ऊँची और कोहनियाँ अजीब-सी।

“क्या कर रही हो?” मैंने पूछा।

“अपने हाथों पर बैठी हूँ। ताकि मदद न कर सकूँ।”

यह शब्दशः था। उसने हाथ अपनी जाँघों के नीचे दबा लिए थे, एक-एक दोनों तरफ़, और उनसे बोरे को भींच रखा था। उसके होंठ हिल रहे थे; मुझे लगता है वह हाथी गिन रही थी।

मैंने बिस्तर में लेटे-लेटे अभ्यास किया था कि अगर ज़रूरत पड़े तो समय रहते कैसे बताऊँ। उस शाम मुझे कुछ कहना नहीं पड़ा।

मैंने डायरी बंद की और बग़ल में दबा ली।

फिर उसने सब लिख लिया। –ज.

टोन्यो ने मार्कर की टोपी खोली और दस्तख़त कर दिए।

उसने झिझक नहीं की, पर देर लगाई। पहले “टो”। फिर आधा “न्”, धीरे-धीरे। फिर “यो”। तीन साफ़, सीधे अक्षर।

एक कोने में एक मुहर उभर आई जिसे किसी ने लगाया नहीं था: पहुँच गया।

लेबल पर “टोन्यू” लिखा था। दस्तख़त में “टोन्यो”।

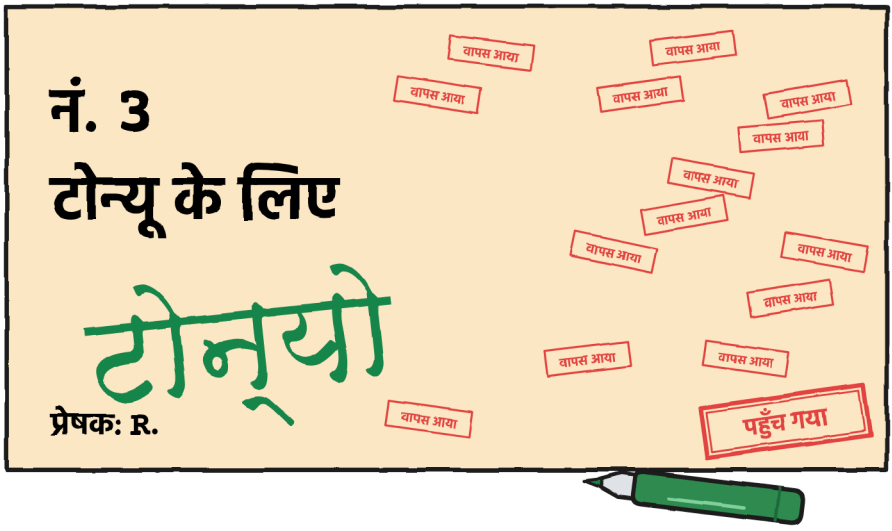

“ऐसे चलेगा?” उसने मारा से पूछा। “नाम तो वही नहीं है।”

मारा ने लेबल ऊपर से नीचे तक पढ़ा, बिना उसे छुए।

“दस्तख़त वही करता है जो पाता है,” उन्होंने कहा। “और पाया तुमने है।”

हम दुकान में लौटे। टोन्यो एक हाथ में घंटी लिए था और उसने फिर हेलमेट पहन लिया था। मेरी डायरी अब भी बंद थी। मारा ने बल्ब बुझाया और सबसे आख़िर में आईं।

उन्होंने दराज़ खोली, रबर-बैंड वाली किताब निकाली और डिलीवरी दर्ज की: एक तारीख़, एक नंबर और तीन अक्षर।

जूलिता के हाथ में पहले से नीला स्टूल था, वही हमेशा वाला, जिस पर चढ़कर वह पोस्टर तक पहुँचती है, और वह दीवार की तरफ़ चल भी चुकी थी। वह एकदम रुक गई। उसने स्टूल को फिर ज़मीन पर रख दिया, पाए नीचे, बिना आवाज़ किए।

“क्या मैं पोस्टर बदल सकती हूँ?” उसने पूछा।

उसने टोन्यो से पूछा, मारा से नहीं।

टोन्यो ने पोस्टर देखा। उसने देर लगाई, जैसे कोई पता जाँचने में लगाता है।

“उस पर बस एक नंबर लिखा है।”

“बस।”

“ठीक है।”

जूलिता स्टूल पर चढ़ी, 18 को एक ही लकीर में काट दिया और उसके बगल में एक विशाल 17 लिख दिया, उसी हरे रंग से जो मिटता नहीं।

मैंने पहले पूछ लिया था। रिकॉर्ड में रहे। –ज.

टोन्यो फ़ुटपाथ पर आया, अपनी साइकिल दीवार से टिकाई और बैग से एक पेचकस निकाला।

“इसे लगाओगे?” मैंने पूछा।

“हाँ।”

“और ‘बिजली’ की बेल?”

“वह ‘बिजली’ की है। यह मेरी है।” और उसने जोड़ा, बिना नज़र उठाए: “साइकिल पकड़ोगे?”

घंटी उसने ख़ुद लगाई। मैंने बस साइकिल थामी, और वह भी उसके कहने पर। क्लैंप हैंडल के चारों ओर बंद हुआ, “बिजली” की स्लेटी बेल के बगल में। टोन्यो ने पेंच तब तक कसा जब तक उसे लगा कि काफ़ी है। मारा दरवाज़े से देख रही थीं, बाँहें मोड़े, जो उनके लिए ताली बजाने का एक तरीक़ा है।

फिर उसने एक उँगली से हथौड़ी को छुआ।

टिन-टिन।

पाँच बजकर दस मिनट पर “बिजली” गुज़री। वे क़तार में सड़क पर आ रहे थे: सबसे आगे ज़ोई, चोटी हवा में उड़ती हुई; उसके पीछे ब्रूनो, फ़्रेम पर हवा का पंप लिए; और आख़िर में टोन्यो जितना एक ख़ाली हिस्सा। ब्रूनो ने ब्रेक लगाया।

“यह क्या बज रहा है?”

“एक घंटी।”

“कहाँ से आई?”

“यह मेरी थी।”

“जब तुम टोन्यू थे तब की?”

मैंने टोन्यो का चेहरा देखा। कुछ नहीं। कान तक नहीं।

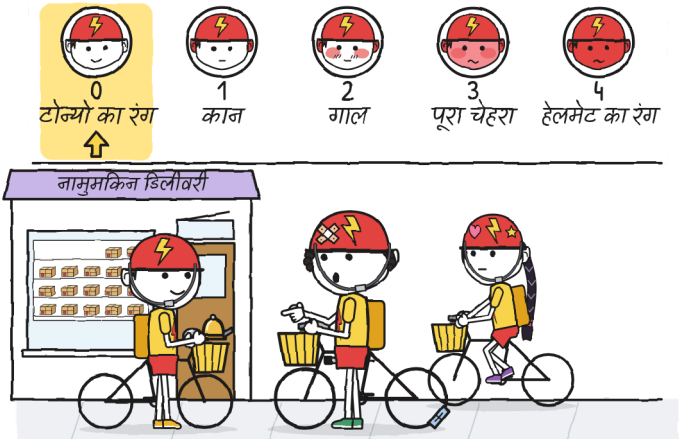

“जब मुझे ऐसे बुलाते थे तब की। अब मेरा नाम टोन्यो है। और तुम्हारा क्या नाम है?”

“पंक्...” ब्रूनो बीच में रुक गया। “ब्रूनो।”

“तो बस, ब्रूनो।”

ब्रूनो ने सिर उठाया, जैसे कोई लाउडस्पीकर पर अपना नाम सुन ले। “बिजली” में दो साल से किसी ने उसे ब्रूनो नहीं कहा था।

ज़ोई ने मुँह खोला।

मंगलवार को उसने “ब्रूनो” काटकर “पंक्चर” लिखा था।

टोन्यो ने हथौड़ी को छुआ। एक बार, किसी की तरफ़ देखे बिना।

टिन-टिन।

ज़ोई ने मुँह बंद कर लिया। उसने सोचा। उसने उतनी देर लगाई जितनी देर पीली बत्ती जलती है।

“अच्छा बजता है,” उसने कहा। “हमें देर हो रही है, टोन्यो।”

उसने कहा “टोन्यो”। बिना कुछ जोड़े। –ज.

वे क़तार में चले गए, ज़ोई, ब्रूनो और, सबसे आख़िर में, टोन्यो, अँगूठा हमेशा हथौड़ी के पास रखे।



उस रात मैंने फिर परदा ऊपर छोड़ दिया।

निगरानी की दोनों कुर्सियाँ भी खिड़की के सामने रख दीं, मेरी और अलार्म घड़ी वाली छोटी, परंपरा के नाम पर, और घड़ी को बग़ल में दबाए बिस्तर में घुस गया। उस रात मैं लेटे-लेटे निगरानी कर रहा था।

“फिर निगरानी?” मम्मी ने गलियारे से पूछा।

“आज मैं यह निगरानी कर रहा हूँ कि कुछ न हो।”

“वह तो मुझे बहुत अच्छी तरह आता है। सो जाओ।”

मैं लगभग बारह बजे तक टिका रहा।

मैं मारूकर खुला रखकर सो गई। मेरा तकिया हरा हो गया है। –ज.

मैं अलार्म बजने से पहले जाग गया, पूरे शरीर को एक टिन-टिन के लिए तैयार करके।

सुबह हुई।

कुछ नहीं बजा।

न टिन-टिन, न कोई खिड़की, न 4 नंबर वाला कुत्ता।

यह सबसे प्यारी ख़ामोशी है जो मैंने अपनी सड़क पर सुनी।





अध्याय 6

फ़िलहाल

शनिवार को, दस बजे, मैंने शेल्फ़ का चित्र बनाया: सत्रह पार्सल और तीन ख़ाली जगहें।

मैं कपड़े पहनकर सड़क पार करके आया था, जो पहले ही तरक़्क़ी है: पहले शनिवार को मैं पजामे और घर की चप्पलों में आया था। अंदर आने से पहले मैंने दरवाज़े के ऊपर वाली छोटी खिड़की देखी, जिसे मारा लौटने वालों के लिए खुला रखती हैं। वह खुली थी। कोई अंदर नहीं आया था।

ख़ाली जगहों में मुझे पार्सलों से ज़्यादा समय लगा। हर एक में एक साफ़ आयत बचा था, और उसके चारों ओर धूल। मैंने उन्हें पेंसिल दबाए बिना बनाया।

इस बीच मारा ने दराज़ से अपनी किताब निकाली और काउंटर पर खोल दी, दरवाज़े की ओर पीठ करके। उन्होंने नं. 3 का लेबल उतारा और उसे अपनी किताब में चिपका दिया, बाक़ी दो के साथ।

टोन्यो, जो शनिवार वैसे निभाता है जैसे डिलीवरी करता है, वक़्त पर और बिना कुछ उतारे, काउंटर के दूसरी तरफ़ से देख रहा था, हेलमेट पहने। उसका नाम, वह जो दस्तख़त में था, बक्से से किताब तक गया था। उसने किताब को देखा। बंद दरवाज़े को देखा। फिर किताब को थोड़ी देर और देखा।

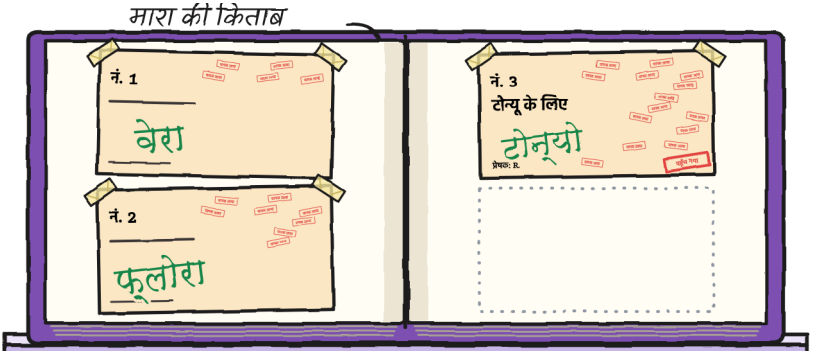

सैंतीस मुहरें, तेईस और चौदह। हरे रंग में तीन दस्तख़त।

एक अंडा, कुछ बीज और एक घंटी। तीनों देर से पहुँचे। तीनों पहुँचे।

तीसरे पर टोन्यो ने दस्तख़त किए। इस बार मैंने उसे बस मारकर पकड़ाया। –ज.

टोन्यो अपने बक्से पर बैठा और कसमसाया। इस बार उसने शेल्फ़ की तरफ़ नहीं देखा।

“बक्सा अब भी ‘फ़िलहाल’ वाला है,” मारा ने किताब से नज़र उठाए बिना कहा।

“फ़िलहाल मेरे लिए ठीक है,” टोन्यो ने कहा।

“फ़िलहाल” सालों तक चल सकता है। नं. 3 से पूछ लो। –ज.

मैंने टोन्यो को उसकी सीट का अपना प्रोजेक्ट दिखाया। उसमें मेरा पूरा हफ़्ता लग गया था।

वह आख़िरी वर्ज़न था, नापों और संकेतों के साथ: डिलीवरी का बक्सा, जो अब सिंहासन बन गया था। उसमें तूफ़ान वाली रात का बैकरेस्ट था; वर्ज़न 2 के आर्मरेस्ट और गिलास की जगह; वर्ज़न 3 की छतरी, झालरों के साथ, और एक नया कालीन, उस पर भी झालरें। एंटीना अपने-आप बन गया, रात के बारह बजे; मुझे नहीं पता वह क्या पकड़ना चाहता था, इसीलिए मैंने उसे रहने दिया।

मैंने उसे दोनों हाथों से थमाया, किसी डिप्लोमा की तरह। टोन्यो ने उसे पूरा देखा, उतनी ही गंभीरता से जितनी से उसने R. की पर्ची पढ़ी थी। वह एक बार भी नहीं हँसा। मैंने इसकी क़द्र की। जूलिता ने मेरे कंधे के ऊपर से उसे ऐसे देखा जैसे कोई तस्वीर में किसी रिश्तेदार को पहचान ले।

“क्या यह मुझे दे दोगे?” उसने कहा।

उसने उसे चार तह करके बक्से पर रखा और उस पर बैठ गया।

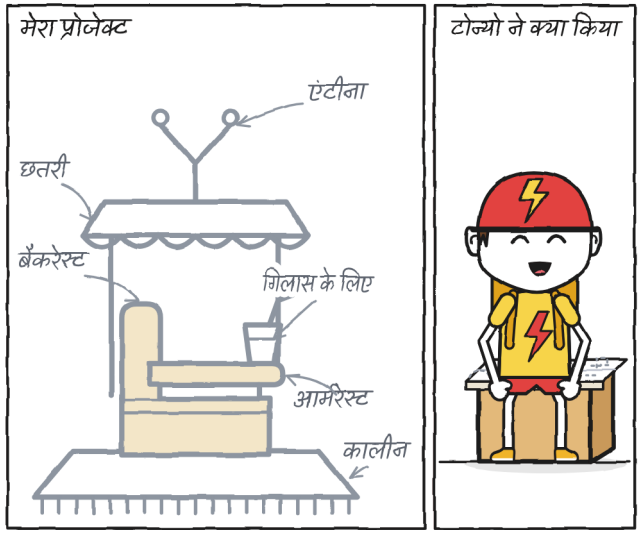

बाहर, घंटी हैंडल पर टेढ़ी हो गई थी। हमने यह तब देखा जब हवा खाने बाहर निकले: वह आधा चक्कर एक तरफ़ लुढ़क गई थी, जैसे बस में सोते हुए किसी का सिर लुढ़क जाता है।

“तुम कसते रहो, मैं इसे पकड़े रखता हूँ,” मैंने कहा।

“मैं कर लूँगा।”

उसने कर लिया। मैं उस पेच को देखता रहा। उसमें सौ चक्कर लग रहे थे।

टोन्यो ने जीभ का सिरा बाहर निकाल लिया। मेरे बग़ल में जूलिता ने हाथ डंगरी की जेबों में कलाइयों तक डाल रखे थे; भींची मुट्ठियाँ अंदर से दिख रही थीं। मेरे पास डंगरी नहीं है: मैंने एक हाथ को दूसरे से पीठ के पीछे पकड़ लिया।

जब टोन्यो ने आख़िरी चक्कर घुमाया, तो घंटी सामने की ओर देखती रह गई, सिपाही की तरह सीधी।

"हो गया," उसने कहा।

मैंने अपना हाथ ख़ुद अपने आप से छुड़ाया, जो दिखने से ज़्यादा मुश्किल है।

अंदर आते ही जूलिता ने काउंटर के नीचे से ऑटोग्राफ़ वाली शीट निकाली। उस पर दो दस्तख़त थे, एक छेद, और उस सुबह से एक पैच: छोटी खिड़की काग़ज़ के टुकड़े और इतने टेप से ढकी थी कि पैच शीट का सबसे मज़बूत हिस्सा बन गया था।

"यह वही जाल वाली शीट है," उसने मारा के पूछने से पहले ही कहा। "मैंने इसे ठीक कर दिया है।"

फिर उसने उसे टोन्यो के सामने रख दिया।

"क्या तुम मुझे ऑटोग्राफ़ दोगे? सच में। नीचे कुछ नहीं है।"

उसने यह धीरे से कहा, एक ही बार, और इंतज़ार किया।

टोन्यो ने शीट के नीचे देखा। काउंटर के नीचे देखा। उसने मेंढक को पलटकर देखा।

जब टोन्यो ने मेंढक उठाया, तो जूलिता के चेहरे की एक नस फड़की। यही उसकी अकेली आपत्ति थी। उसने उसे ख़ुद ही वापस ले लिया।

"ठीक है।"

उसने पैच के ऊपर दस्तख़त किए: "टोन्यो", आख़िरी अक्षर से लटकती एक बिजली के साथ।

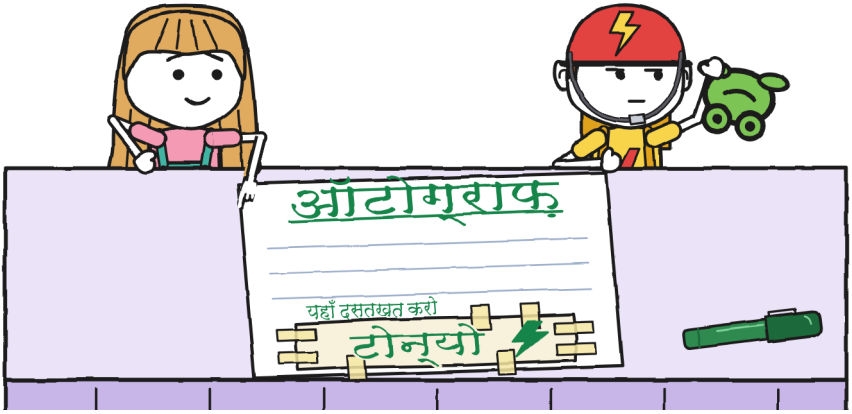

मैं इसी लायक़ हूँ। –ज.

दोपहर को टोन्यो एक डिलीवरी पर निकला। मैंने उसे दरवाज़े से जाते देखा, घंटी अपनी जगह पर कसी हुई। गोल टोपी पहने एक बुज़ुर्ग अपनी छड़ी के साथ नुक्कड़ की ज़ेबरा क्रॉसिंग पर धीरे-धीरे सड़क पार कर रहे थे।

टोन्यो रुक गया। एक पैर ज़मीन पर रखकर इंतज़ार किया। फिर उसने घंटी बस एक बार बजाई, ताकि बुज़ुर्ग को पता चल जाए कि वह वहाँ है।

टिन-टिन।

बुज़ुर्ग ने सलाम करने के लिए छड़ी उठाई और अपनी चाल से चलते रहे।

मारा मेरे बग़ल में दरवाज़े पर आ गई थीं, बाँहें मोड़े।

“ये दादा अंतोनियो हैं,” उन्होंने कहा। “मेरी लिस्ट के दूसरे टोन्यू।”

ये वही थे जिन्होंने कहा था “काश मैं होता।” वे हमारे फ़ुटपाथ तक आए और टोन्यो की साइकिल के पास रुक गए, जो गई नहीं थी: वह वहीं थी, एक पैर ज़मीन पर, हाथ हथौड़ी के पास, बिना जल्दी के।

“क्या वह घंटी नई है?” बुज़ुर्ग ने पूछा।

“पुरानी है,” टोन्यो ने कहा। “मेरी थी। जब मुझे टोन्यू कहते थे।”

“मुझे साठ साल से किसी ने ऐसे नहीं बुलाया। चाहो तो बदल लेते हैं: तुम दादा अंतोनियो, मैं टोन्यू।”

टोन्यो ने सोचा। उसने टोपी को देखा, फिर अपने हैंडल को।

“फ़िलहाल नहीं।”

दादा अंतोनियो ने सिर हिलाया और टोपी को एक उँगली से छुआ, जैसे कोई सौदा पक्का भी करता है और खुला भी छोड़ देता है।

“मैं यहीं हूँ,” उन्होंने कहा। “मैं धीरे-धीरे पार करता हूँ।”



टोन्यो डिलीवरी से बारह मिनट में लौट आया। जूलिता ने समय नापा था। वह अपनी घड़ी को देखती रह गई, पर उसने कुछ नहीं कहा। टोन्यो अपने बक्से पर बैठ गया।

मैंने R. का कार्ड निकाला। वह एक पन्ना था, जिसमें चित्र की जगह एक बड़ा प्रश्नचिह्न था और उसके नीचे R., और उसमें छह सुराग़ थे। मैंने दो और जोड़ दिए:

- सुराग़ 7. R. की जान-पहचान तब से थी जब टोन्यो छोटी साइकिल चलाता था।
- सुराग़ 8. R. ने उसे एक बजने वाली घंटी का वादा किया था। सालों लग गए।

टोन्यो ने मुझसे पेन माँगा और नीचे अपनी लिखावट में लिखा। लिस्ट के बाहर, डिलीवरी वालों के कसे हुए बड़े अक्षरों में, जो नीचे वाले पन्ने पर भी उभर आते हैं:

बाक़ी: उसे मुझे सफ़ाई देनी है।

“और तुम उसे धन्यवाद नहीं दोगे?” जूलिता ने पूछा। उसने धीरे से पूछा, जैसे कोई भरा हुआ प्याला ले जाता है।

“धन्यवाद भी और शिकायत भी। दोनों। जब पता चलेगा किसे।”



एक बजे वेरा आईं, गोद में चूरा और बालों में एक टहनी लिए।

“मदद माँगने आई हूँ,” उन्होंने कहा। “चूरा अब उड़ना सीख गई है। अब उसे उतरने के लिए एक सुरक्षित जगह चाहिए।” वे रुकीं। “कल उसने मेरा सूप चुना।”

पहले शब्द से ही मैं स्टूल पर सीधा हो गया। चूरा के एक सींग से सेवई लटक रही थी। उसने मुझे देखा और मेरी “मैंने नहीं किया” वाली शक्ल बना ली।

तुम्हारी वाली, हू-ब-हू। सेवई समेत। –ज.

“क्या आपको किसी तेज़ आदमी की ज़रूरत है?” टोन्यो ने अपने बक्से से पूछा।

चूरा ने वेरा की गोद से झुककर उसके हेलमेट को सूँघा।

“मुझे ऐसे इंसान की ज़रूरत है जो इंतज़ार करना जानता हो,” वेरा ने कहा।

“वह भी जानता हूँ। इसी हफ़्ते से।”

उसके पीछे जूलिता ने दोनों हाथ ऊपर उठा दिए, जैसे कोई बहुत शिष्ट डकैती में हार मान रहा हो।

मैं भी इंतज़ार करना जानती हूँ। अब हो गया? –ज.

जब मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं एक लिस्ट बनाता हूँ। इस बार मुझे समझ आ रहा था और लिस्ट फिर भी बन गई: इस डायरी का आख़िरी पन्ना, डिलीवरी की तालिका।

डिलीवरी नं. 3। हर किसी को कितना समय लगा:

- “बिजली”: दस मिनट।
- R.: सालों।
- टोन्यो: छह दिन।
- जूलिता, सुनती हुई: ग्यारह मिनट (रिकॉर्ड)।

टोन्यो अपने बक्से से उठा, हेलमेट ठीक किया और एक उँगली से जाँचा कि घंटी अब भी सीधी है। वह सीधी थी।

वह अपनी डिलीवरी पर चला गया। सड़क से एक टिन-टिन आया। फिर एक और।

इस बार घंटी वह ख़ुद बजा रहा था।

मैं अब भी अकेली बजती हूँ। कोशिश जारी है। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · ५

(बहुत जल्द)

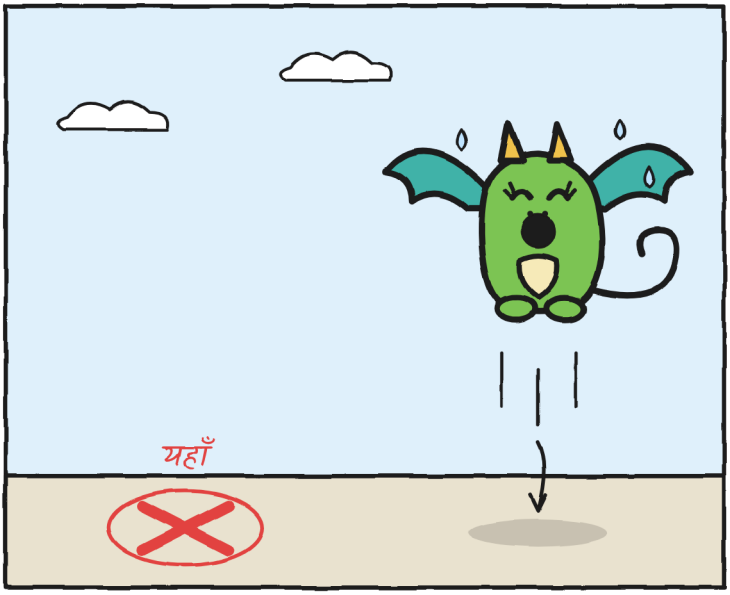

ड्रैगन की वह बच्ची कहाँ उतरेगी जो तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है? –ज.

मोहल्ला (वर्ज़न 3)

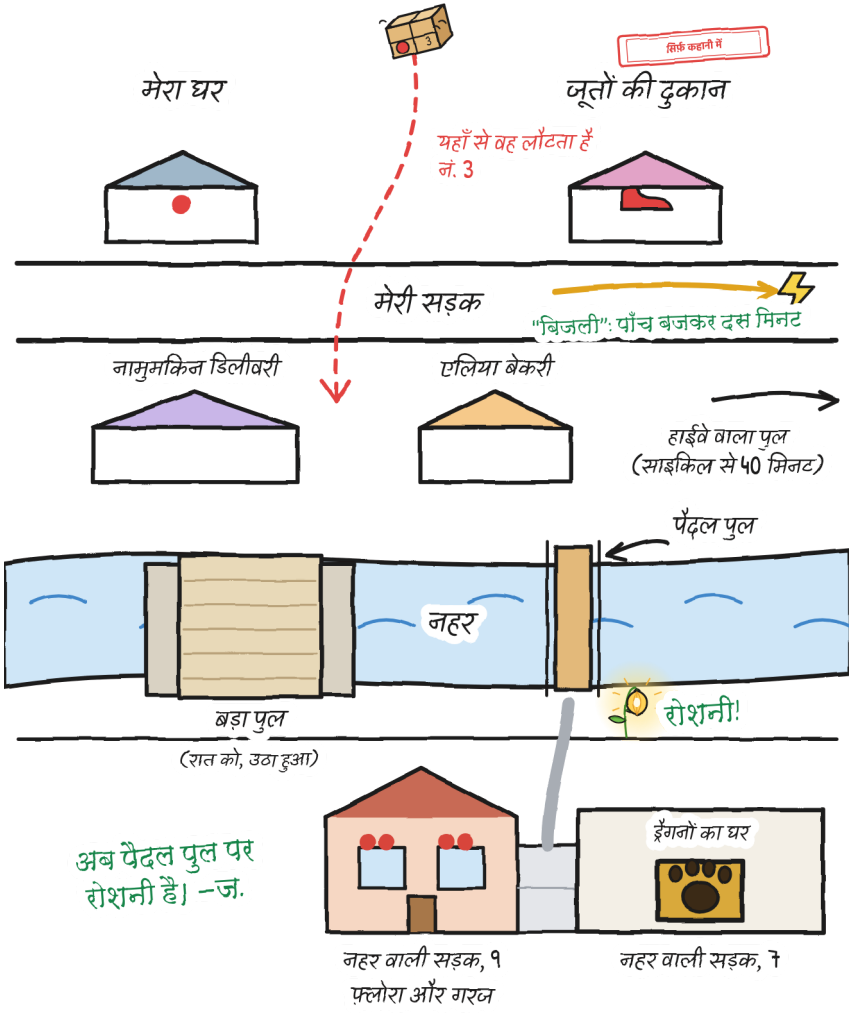
सिर्फ़ कहानी में
मेरा घर
जूतों की दुकान
यहाँ से वह लौटता है
नं. 3
मेरी सड़क
"बिजली": पाँच बजकर दस मिनट
नामुमकिन डिलीवरी
एलिया बेकरी
हाईवे वाला पुल
(साइकिल से 40 मिनट)
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात को, उठा हुआ)
अब पैदल पुल पर रोशनी है। –ज.
इंगनों का घर
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरज
नहर वाली सड़क, ٦

और तुम्हें क्या कहकर बुलाएँ?

टोन्यो को टोन्यू कहकर बुलाते थे। अब वह ख़ुद चुनता है कि उसे क्या कहा जाए। और तुम?

मुझे इस नाम से बुलाया जाना पसंद है...

तुम मुझे इस नाम से भी बुला सकते हो...

मुझे इस नाम से न बुलाया जाए तो अच्छा...

मैं जूलिता हूँ। "ज." सिर्फ़ तब, जब मैं दस्तख़त करती हूँ। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी

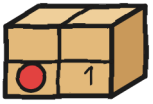

1 · यह पार्सल काटता है

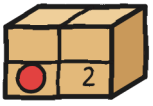

2 · बादल गरजने से पहले न खोलें

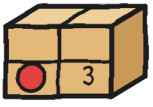

3 · वापस भेजिए, प्लीज़

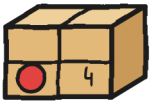

4 · (बहुत जल्द)

बाक़ी सतूरह। –ज.

एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

सबका अपना साइज़। टिन-टिन वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ के अभ्यासों के साथ)*

असली साइकिल: क्या करें

1. हेलमेट हमेशा, और ठीक से बँधा हुआ। “बस यहीं पास तक जाना है” हो तब भी।
2. ऐसे चलो कि लोग तुम्हें देख और सुन सकें: लाइटें, चमकीले कपड़े और बेल। बेल सावधान करती है; हुक्म नहीं चलाती।
3. हैंडल पर दोनों हाथ। अगर कुछ तुम्हारा ध्यान भटकाए, तो किसी सुरक्षित जगह पर रुको।
4. फ़ुटपाथ पैदल चलने वालों का है: वहाँ साइकिल हाथ से पकड़कर पैदल ले जाओ। सड़क पार करने से पहले रुको और देखो।

“सिर्फ़ कहानी में” वाली मुहर बताती है कि कहानी में क्या होता है, सड़क पर नहीं।

निकलने से पहले अपनी साइकिल जाँचो

